शाश्वत धर्म

(जि. गांधीनगर)
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र कोबा

मई १९९३

रे चिर प्रवासी ! चंद दिन का, तू मुसाफिर है जहाँ।
जाना तूझे आखिर यहाँ से, सोचकर करना यहाँ ?
जिसके लिये तू कर रहा, दिन रात मेहनत सर्वदा।
क्या संग तेरे आयेगा ? चिन्तन किया तूने कदा ?

सम्पादक – जे. के. संघवी

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी, * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा - आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगमचंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा-पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा-पोता प्रतापचंदजी - सुरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल, शांतिलाल जिनेशकुमार, वेटा-पोता कन्नाजी कटारिया - जाखल निवासी, * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ - धानेरा, स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुवाई, सुपूत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा - आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, बेटा-पोता, रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल, बावुलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रूपेशकुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मोरखीया नानचंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखवचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी, * श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार, बेटा-पोता खुशालजी रामाणीगुडा बालोतान (फर्म - शांतिलाल ज्वेलर्स नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा-पोता सांकलचंद जेरूपजी-भेंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई, सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटा-पोता बेचरदासजी छाजेड़ - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज.) * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरुभक्तोंद्वारा, * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल, कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा, * श्री विमलनाथ जैन डोसी दहेरासर - थराद, * श्री सौधर्म वृहत्पोगच्छ जैन संघ - आणंद (गुज.) * श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ - थलवाड (राज.) * श्री वृहत्पोगच्छीय जैन संघ - जावरा (म.प्र.) * श्री सौधर्म वृहत्पोगच्छ जैन संघ - वासणा (गुज.) * श्री महाविदेहतीर्थधाम - नवागाम, सुरत (गुज.) * आहोर निवासी संघवी जुगराज, कान्तिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलिप, धीरज, संदीप बेटा-पोता, कुन्दनमलजी भुताजी श्री श्रीमाल वर्धमान गोत्रीय परिवार थाने (महाराष्ट्र)

1302

आ. श्री कैलाससागरसूरि ज्ञान म...
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

शाश्वत धर्म

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

संस्थापक व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी

सम्पादक : जे. के. संघवी

सहसम्पादक : शांतिलाल सुराना

विज्ञापन शुल्क (एक बार)
पूरा पृष्ठ - पांच सौ रुपये
आधा पृष्ठ - तीन सौ रुपये
पाव पृष्ठ - दो सौ रुपये
अंतिम कवर पृष्ठ - एक हजार रुपये
कवर पृष्ठ २ या ३ - सात सौ रुपये

सदस्यता शुल्क
बीस वर्षीय-पांचसौ रुपये
दस वर्षीय-तीन सौ रुपये
तीन वर्षीय- एक सौ रुपये

सम्पर्क सूत्र
कार्यालय © ५३४ ०७ २४ निवास © ५३४ ८० ७३
शाश्वत धर्म कार्यालय
डेवलेपमेन्ट बैंक के पास, जामली नाका-थाने-४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

वर्ष : ४० ★ अंक-१२ ★ मई १९९३

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

शाश्वत धर्म – मई १९९३

झरोखा

- सम्पादकीय .... जे. के. संघवी ३
- दान .... आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा. ५
- संयम : नींव की पहली ईंट...... आचार्य श्री विद्यानंदविजय मुनिजी ९
- श्री महावीर स्वामी जिन-स्तवन (२४) ..... मुनि श्री जयानंदविजयजी ११
- स्वाध्याय : एक चिन्तन...... उपाध्याय स्व. श्री अमरमुनिजी म. सा. १३
- ज्ञान कसौटी (२३) .... श्री महेन्द्र जे. संघवी १७
- स्वास्थ्य चर्चा (सोच देखें : टानिक या खून) .. डॉ. जागृति बहन दवे १९
- उर्जा उत्पादन में पशुओं का योगदान .... श्री पन्नालाल मुंधड़ा २१
- आतंकवाद और महावीर .... श्री अमृतऋषी २३
- क्या आप जानते हैं? .... धर्ममित्र २५
- युवा संदेश .... मुनि श्री रत्नसेनविजयजी म.सा. २६
- सरे राह चलते-चलते .... प्रवासी २७
- रूकिये! पढ़िये!! सोचिये!!! .... मुसाफिर २९
- अहिंसा और शाकाहार .... स्व. श्री लक्ष्मीचंद 'सरोज' ३०
- मानव मन .... श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ३५
- मुक्तक .... मुनिश्रीतरुणसागरजी ३९
- समाचार दर्शन .... संकलित ४१
- समाचार सार .... संकलित ४२
- साहित्य स्वीकार .... संकलित ४०

गुजराती विभाग

- हिसाब जिंदगीनो .... मुनि श्री प्रशान्तरत्न विजयजी ४५
- मनोवृत्ति ४७

लेखक के विचारों से सम्पादक अथवा परिषद की सहमति आवश्यक नहीं है।

Typesetting By : Chaitanya Typesetting
B-2, Sagar Apartments, Brahmin Society, Naupada Thane.

सम्पादकीय

स्वाद के लिये स्वास्थ्य की कुर्बानी

जीवन के लिये भोजन या भोजन के लिये जीवन - इस पर गौर से सोचें तो पता चलेगा कि सदियों से मानव जीने के लिये भोजन करता आया है। आहार का असर स्वास्थ्य और मन पर भी पड़ता है। किन्तु पिछले कुछ समय से मानव ने अपने आहार मे स्वाद को ज्यादा महत्व दिया है। स्वाद के नाम पर पेय पदार्थों के विज्ञापन दूरदर्शन और पत्र-पत्रिकाओं के जरिये हम खूब देखते हैं। एक तरह से कोशिश यह की जाती है कि ये आधुनिक जीवन के प्रतिक जैसे बन जायें और इसीलिये इन्हें बनानेवाली कम्पनियाँ विज्ञापनों पर करोड़ों रूपये खर्च करती है। इन सारे शीतल पेयों में पोषक तत्व कुछ नहीं होते। इनमें स्वाद और सुगंध के रसायन मिले होते हैं, इसलिये इनको पीना लगभग एक गिलास पानी पीने जैसा है, उल्टे उनमें मिले रसायन शरीर को नुकसान पहुंचाते हैं। दूसरी ओर इनके दाम भी बहुत ज्यादा होते हैं, लेकिन भारी विज्ञापनबाजी के कारण ये परम्परागत स्वास्थ्यवर्धक पेयों और फलों के रसों से बाजी मार ले जाते हैं।

ब्राजील दुनियाँ में सबसे ज्यादा संतरे पैदा करनेवाला देश है। एक सर्वेक्षण के अनुसार वहाँ संतरों की प्रति व्यक्ति खपत दुनियाँ में सबसे कम हैं क्यों कि उनका निर्यात कर दिया जाता है। वहाँ माता-पिता अपने बच्चों को औरेंज और फेंटा पिलाती हैं, जिसमें पौष्टिक तत्व शून्य है। उसमें संतरे की रासायनिक गंध और स्वाद भर है, लेकिन उन्हें लगता है कि वह असली संतरे से भी ज्यादा स्वास्थ्य वर्धक है।

इन शीतल पेयों में ब्रोमीनेटेड वेजीटेबल आइल्स (बीवीओ) नामक रसायन मिलाया जाता है, जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। यह पाया गया है कि बीवीओ की अधिक मात्रा हृदयरोग पैदा कर सकती है और संभवतः इससे कैंसर भी हो सकता है, इसके लिये पश्चिमी देशों में इस पर कई साल पहले पाबंदी लग गयी थी, फिलहाल दुनिया के १२८ देशों में इसका उपयोग वर्जित है। अपने यहाँ एक वर्ष पहले इसके इस्तेमाल पर पाबंदी लग गई है लेकिन यह पाया गया है कि इन शीतल पेयों के निर्माता अब भी इस खतरनाक रसायन का इस्तेमाल कर रहे हैं। इन पेयों को बनाने वाली कम्पनीयों ने दलील की है कि बीवीओ का उपयोग उनके उत्पादन के उच्च स्तर को बनाए रखने के लिए जरूरी है। स्वाभाविक है उच्चस्तर से उनका आशय सिर्फ स्वाद से है, स्वास्थ्य से नहीं। अन्यथा वे बतायें कि उसमें कौन-सा प्रोटीन या विटामिन आता है।

उसी प्रकार बिलकुल अनुपयोगी, बेकार व हानिकारक चीज है पान-मसाला। जिसे आजकल फैशन के नाम पर लोग बड़े ही चाव से चबाते रहते हैं। इसके निराले स्वाद की महिमा गाते हुए अखबारों, दूरदर्शन व थिएटरों में बड़े-बड़े खर्चीले विज्ञापन प्रसारित किये जाते हैं। दर असल लगातार पान मसाला चबाते रहने से मुंह में कैंसर होने की संभावना रहती है जब कि पेट, अंतडियाँ, यकृत की बीमारियाँ और अल्सर, पीलिया जैसे जानलेवा रोग भी हो सकते हैं। लगातार पान मसाले के सेवन से भूख कम लगती है। कैंसर या दिल की बीमारी का भी खतरा रहता है।

ऐसी कौन-सी चीजें होती है पान-मसाले में, जो शरीर के लिये हानिकारक साबित होती है? पान-मसाला में तम्बाकू, चूना, किवाम, सुपारी, कत्था और खुशबुदार मसालों का अंश होता है जो सब स्वयं कार्सिनोजेन्स होते हैं यानी इनको मिलाकर लगातार चबाते रहने से मुंह के भीतर फफोले आ जाते हैं। गाल और मसूढे, जबड़ा, हलक, जीभ, गला आदि छिल जाते हैं। गुटका या जर्दा मिश्रित पान मसाला मुंह में जिस स्थान पर लगातार रखा जाता हैं वहा घाव हो जाता है।

पिछले दिनों बम्बई में एक किस्सा प्रकाश में आया। जिसमें निजी अस्पताल में एक मरीज के पेट का ऑपरेशन हुआ। ऑपरेशन करके उसकी अंतड़ियों का एक बडा-सा हिस्सा काट लिया गया। क्यों कि पान मसाला खा-खाकर उसकी अंतडियों में वह जम गया था। उसकी अंतड़ियाँ सड़ गयी थी और ऑपरेशन करके काट डालने के अलावा कोई चारा नहीं था। यह स्थिती हुई पान मसाला के अति सेवन से।

पिछले दिनों काफी बहस हुई कि पान-मसाला के हर डिब्बे पर चेतावनी छापी जाए कि रोजाना चार ग्राम से ज्यादा पान-मसाले का सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। पर दुर्भाग्य से तम्बाकू लॉबी की तरह पान-मसाला की लॉबी भी मजबूत साबित हुई और स्वास्थ्य रक्षा करने वालों को इसने दूर हटा दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि एक हल्की-सी चेतावनी पान-मसाला के डिब्बे पर छापी गई कि पान-मसाला स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

दर असल कोशिश यह होना चाहिये कि इस तरह के पेय और खाद्यों के उपयोग को प्रोत्साहित न किया जाय। स्वास्थ्य को चौपट करने वाले इनके विज्ञापनों पर रोक लगना चाहिये। क्यों कि ये एक तरह का शारीरिक और सांस्कृतिक कुपोषण फैलाते हैं। इस भड़कीली और चटपटी संस्कृति में सिर्फ स्वाद है लेकिन आखिरकार वह स्वास्थ्य के लिए हानिकर/खतरनाक है।

J.K. Sanghvi

(जे. के. संघवी)

दान

आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी

श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा.

मनुष्य जीवन में दान का स्थान महत्वपूर्ण है। दान समस्त सद्गुणों का मूल है। दया धर्म की माता है। दया की रचनात्मक अभिव्यक्ति दान है। जब तक हृदय में सहानुभूति या अनुकम्पा नहीं होती; तब तक कोई दान नहीं देता। दाता दुर्लभ होते हैं। कहा भी है –

शतेषु जायते शूरः सहस्त्रेषु च पण्डितः ।
वक्ता दशसहस्त्रेषु दाता भवति वा न वा ॥

सैंकडों में कोई एक शूरवीर होता है, हजारों में कोई एक पंडित होता है, दस हजार में कोई एक वक्ता होता है और दाता तो कभी कहीं होता है और कभी नहीं भी होता।

अक्सर ऐसा होता है, कि भोजन का निमंत्रण पाकर जो चेहरा खिल उठता है; वही चेहरा जब दान का प्रसंग आता है; तब मुरझा जाता है। किसी सन्त कवि ने कहा है –

धर्म नी वेळा नवि दियेजी, फूटी कौडी रे एक ।
राउळ मां सन्ध्यो थकोजी, खूणे गणी दिये छेक ॥

धर्म के नाम पर जब देने का समय आता है; तब हजार बहाने बनाये जाते हैं; परन्तु अपने गलत व्यवसाय के कारण जब राजकीय मुसीबत में फँस जाते हैं या अपना कोई काम करवाना होता है; तब हजारों रुपये तिजोरी में से बाहर आ जाते हैं।

हमें यह याद रखना चाहिये कि मज़बूरी में किये गये ऐसे दान (रिश्वत दान) से कोई धर्म नहीं होता। भले ही वह गुप्त दान हो। पर जो अनुकम्पा भाव से दान दिया जाता है, उससे ही पुण्योपार्जन होता है। रिश्वत दान तो अपने अपराध को छिपाने के लिए और सजा से बचने के लिए किया जाता हैं। यह कोई धर्म कृत्य नहीं है। सच तो यह है कि रिश्वत दान नहीं है। वह तो अपना काम करवाने का या सजा से बचने का मूल्य है।

हमें यह ध्यान में रखना चाहिये कि दाता की सदा उन्नति होती है और संग्रहकर्ता की अवनति। देखो तो सही; जल का दान करनेवाले बादल सदा ऊँचाई पर होते हैं और पानी का सदा संग्रह करनेवाला समुद्र हमेशा नीचे रहता है। देनेवाले का हाथ ऊपर रहता है और लेनेवाले हाथ नीचे रहता है।

धन का दान किया जाता है; भोग किया जाता है और धन का नाश भी होता है। जो न तो दान देता है और न भोग ही करता है; उसका धन अन्त में नष्ट हो जाता है। ऐसा कंजूस धनवान घास के पूतले के समान हैं; जिसे खेत की रक्षा के लिए किसान खेत में खड़ा करते हैं। वह खेत का अनाज न खुद खाता है और न पक्षियों को खाने देता है।

जो बादल जल का संग्रह करता है, वह काला हो जाता है; किन्तु ज्यों-ज्यो वह जल का दान करता है; त्यों-त्यों वह उज्ज्वल होता जाता है। दान देनेवाले की आत्मा भी इसी प्रकार क्रमशः उज्ज्वल से उज्ज्वलतर होती जाती है।

गृहस्थ के जो छह कर्त्तव्य हैं; उनमें दान भी है। दान देना गृहस्थ का धर्म है। 'सावय धम्म दोहा' में एक दोहा इस प्रकार है –

जइ गिहत्थु दाणेण विणु, जगि पभाणिअइ कोइ ।
ता गिहत्थु पंखि वि हवइ, जे धरु ताह वि होइ ॥

यदि दान न करनेवाले को भी गृहस्थ (घर में रहनेवाला) कहा जाये; तो पक्षी भी गृहस्थ कहलायेगा; क्योंकि गृह (घौसला) तो उसके भी होता है और वह उसमें रहता भी है।

रहीमदासजी लिखते हैं –

रहिमन वे नर मर चुके, जो कहु माँगन जहिं ।
उनते पहले वे मुए, जिन मुख निकसत ना हीं ॥

उत्तम मनुष्य याचक की आवश्यकता का अनुमान लगाकर बिना माँगे ही उसे दे देता है । मध्यम पुरुष याचना करने पर दे देता है; पर जो अधम पुरुष होता है; वह याचना करने पर भी कुछ नहीं देता । याचक को 'ना' कहनेवाला धनी मृतक के समान है । जो माँगते है, वे तो मृतक समान (गौरवहीन) हैं ही; पर देने से इन्कार करनेवाले उन याचकों से भी पहले मर चुके होते हैं ।

बौद्ध धर्म कहता है कि यदि चोरी की बुराई समाज से मिटाना हो, तो सबको दान-धर्म का पालन करना चाहिये ।

दीघनिकाय ३-३-४ में लिखा है –

अधनानं धने अननुप्पदीयमाने दालिद्दियं वेपुल्लमगभासि ।
दालिद्दिये वेपुल्लंगते अदिन्नादानं वेपुल्लमगमासि ।

निर्धनों को धन दान न करने से समाज में दरिद्रता बढ़ने से अदत्ता दान अर्थात् चोरी का कार्य बढ़ जाता है ।

महात्मा बुद्ध कहते हैं कि दान से पुण्य बढ़ता है और मित्रता बढ़ती है । दूसरों को उनके मन के अनुकूल जो देता है; उसे अपने मन के अनुकूल प्राप्त होता है । दान अपने हाथ से करना चाहिये । प्रसन्नता के साथ किये गये अल्प दान का भी महान फल प्राप्त होता है । दान के बाद पछतावे से बचना बहुत कठिन कार्य है । दान के बाद जो प्रसन्नता का अनुभव करता है, वही वास्तव में उदार है । दान का फल परलोक में – जन्मांतर में भी प्राप्त होता है; परन्तु इस बात पर वे लोग विश्वास नहीं करते; जो दान नहीं करते ।

तत्त्वार्थाधिगम सूत्र के सातवें अध्याय में लिखा है –

अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ।

अर्थात् अनुग्रह के लिए धन का त्याग करना दान है ।

विधि द्रव्य दातृ पात्र विशेषात्तद्विशेषः ।

अर्थात् विधि, द्रव्य, दाता और पात्र की विशेषता से दान में विशेषता आ जाती है ।

इन सूत्रों से हमें यह मालूम होता है कि दान करते समय कितना व्यापक विचार करना चाहिये ।

देशकाल के औचित्य का तथा लेनेवाले के सिद्धान्त में बाधा न आये – ऐसा विचार करना विधि विचार है ।

दी जानेवाली वस्तु के गुण दोष का तथा उपयोगिता का विचार द्रव्य विचार है ।

दाता में श्रद्धा कितनी है - दान-पात्र के प्रति उसमें उपेक्षा, तिरस्कार, असूया आदि के भाव तो नहीं हैं ? दान के बाद उसमें किसी प्रकार का पछतावा, शोक या विषाद के भाव तो नहीं

उत्पन्न होते ? आदि विचार दातृ विचार है।

जिसे दान दिया जा रहा है; वह सुपात्र है या नहीं अर्थात् दी गयी वस्तु का वह सदुपयोग करेगा या दुरुपयोग; इस प्रकार का विचार पात्र विचार है।

शुभ वस्तु का दान भी अगर कुपात्र को दिया जाये; तो उसका फल अशुभ होता है। एक सरोवर मे गाय ने जल पिया और साँप ने भी; परन्तु जो जल गाय के शरीर में दूध बन गया, वही जल साँप के शरीर में जहर बन गया। इससे सुपात्र दान का महत्त्व समझा जा सकता है। प्राकृत सुभाषित संग्रह में एक गाथा इस प्रकार है –

तुच्छं पि सुपत्तम्मिउ, दाणं नियमेण सुहफलं होइ।
जह गाविए दिन्नं, तिणं पि रवीरत्तमुवेइ॥

साधारण सी वस्तु का दान भी यदि सुपात्र को दिया जाता है; तो वह निश्चय ही सुफल होता है; जैसे गाय को दिया हुआ तिनका भी दूध बन जाता है।

इससे विपरीत साँप को दिया हुआ दूध भी ज़हर बन जाता है। यह बात तो सब लोग जानते ही हैं।

'उपदेश प्रासाद' ग्रन्थ में लिखा है कि सुपात्रदान और अभयदान से मोक्ष प्राप्त होता है।

किसी के पास धन होता है तो मन नहीं होता और मन होता है तो धन नहीं होता। यदि किसी के पास धन और मन दोनों होते हैं; तो उसे सुपात्र का योग नहीं मिलता। धन, मन और सुपात्र इन तीनों का योग तो किसी पुण्यशाली को ही प्राप्त होता है।

दान में इच्छा अर्थात् स्वार्थ भावना नहीं होनी चाहिये; पर श्रद्धा भरपूर होनी चाहिये। साथ ही उचित अवसर का भी ध्यान रहना चाहिये।

प्राकृत सुभाषित संग्रह में लिखा है –

कर चुलुअ पाणियेण वि, अवसर दिण्णेण मुच्छिओ जिअइ।
पच्छा मुआण सुन्दरी। घडसय दिण्णेण कि तेण॥

उचित समय पर दिये गये हाथ के चुल्लू भर पानी से भी मूर्च्छित व्यक्ति जीवित हो जाता है – वह होश में आ जाता है; किन्तु हे सुन्दरी! मरने के बाद सौ घड़े पानी देने से भी क्या लाभ?

पाश्चात्य विचारक विक्टर ह्यूगो ने लिखा है –

ज्यों-ज्यों बटुआ खाली होता जाता है; त्यों-त्यों हृदय भरता जाता है। तात्पर्य यह है कि जितना अधिक दान दिया जाता है; उतने ही अधिक सद्गुण हृदय में प्रवेश करते हैं।

एक विचारक की कब्र पर निम्नलिखित सूक्ति खुदी हुई है –

What I gave, I have; what I spent, I had; what I kept, lost

जो कुछ मैंने दान दिया, वह मेरे पास है; जो मैंने खर्च किया – भोगोपभोग में लगा दिया, वह मेरे पास था और जो मैंने रखा है - जिसका उपयोग किये बिना मैं शरीर का त्याग कर रहा हूँ; वह मैं खो चुका हूँ।

सर सेठ हुकमीचन्दजी इन्दौर के कॉटन किंग माने जाते थे। अगणित धन सम्पदा के मालिक थे वे। एक दिन उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। अपने भवन में पलंग पर आराम कर रहे थे। एक मित्र उनसे मिलने आया। बातचीत के दौरान उसने कहा "आपके पास इतनी धन दौलत है। आप इसका वसीयन नामा तो लिख दीजिये।

सेठजी बोले – "कैसी धन दौलत ? मेरे पास सिर्फ सतरह लाख रुपये हैं और यह रकम इतनी छोटी है कि इसका वसीयतनामा लिखा नहीं जा सकता। और इसीलिए अब तक लिख नहीं सका।"

मित्र बोले – "आप तो करोड़ों के मालिक हैं; फिर आप स्वयं को केवल सत्रह लाख का ही मालिक क्यों मानते हैं ? आप कहीं भ्रम में तो नहीं हैं ?"

सेठजी ने उत्तर दिया – "मैं भ्रम में नहीं हूँ। बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ। अब तक केवल सतरह लाख रुपयों कही मैने अपने हाथों से दान किया है; इसलिए मैं इतने का ही मालिक हूँ। शेष-जो संपत्ति है; उसके मालिक पुत्र पौत्रादि परिवार जन हैं। दान के द्वारा जो पुण्योपार्जन मैंने किया है; वहीं परलोक में मेरे साथ आनेवाला है। शेष सारा धन यहीं छूट जायेगा। समझपूर्वक परोपकार के लिए दी गयी संपत्ति का ही मैं मालिक हूँ वास्तव में। और इस सम्पत्ति का वसीयतनामा तो लिखा ही नहीं जा सकता। मैं विवश हूँ।"

दानवीर कर्ण का नाम भारत के इतिहास में अमर है। कहते हैं, उनके द्वार से कभी कोई याचक खाली हाथ नहीं लौटता था। महाभारत के युद्ध में जब कर्ण घायल होकर गिर पड़े थे; उस समय श्री कृष्ण ने उसकी दानवीरता की परीक्षा लेने का निश्चय किया। वे विप्र वेश में कर्ण के पास पहुँचे। कर्ण के पास उस समय देने लायक कुछ नहीं था। विप्र ने याचना की। कर्ण विचार में पड़ गये। पास में कुछ है नहीं और यदि याचक खाली हाथ लौटता है; तो प्रतिज्ञा टूटती है।

कहते है - जहाँ चाह होती है, वहाँ राह मिल ही जाती है। अचानक कर्ण को याद आया कि उनके दाँतों में सोने की एक मेख लगी हुई है। उन्होंने तुरन्त एक पत्थर उठाया और अपने दाँत तोड़ डाले। सोने की वह मेख निकाल कर विप्र को प्रदान कर दी।

उसी समय श्री कृष्ण ने प्रकट होकर उनकी इस दानवीरता की हार्दिक प्रशंसा की।

एक दिन सरोवर ने सरिता से कहा – "तुम अपनी जल सम्पदा बहुत दूर से लाती हो और उसे खारे समुद्र को लुटा देती हो। क्या यह कोई समझदारी का काम है ?"

सरिता ने कहा – "प्रति फल की इच्छा के बिना निरन्तर देते रहना ही मेरा धर्म है। जीवन की सफलता दान में ही है, संग्रह में नहीं।"

कुछ महीने बीते। गर्मी का मौसम आया। भीषण गर्मी से सरोवर का जल सूख गया। वहाँ सर्वत्र कीचड़ ही कीचड़ दिखाई देने लगा। उसकी यह स्थिति देखकर सरिता ने कहा – "क्यों भाई ! वह तुम्हारी अपार जल सम्पदा कहाँ है; जिसका तुमने संग्रह किया था ? मैं क्षीण काय होकर भी जीवित तो हूँ; क्योंकि मैं सदा बहती रहती हूँ। मै निरन्तर देती ही रहती हूँ।"

* शेष अगले अंक में

संयम : नींव की पहली ईंट

आचार्य श्री विद्यानंद मुनिजी

संयम का जीवन में बहुत ऊंचा स्थान है। धर्म के क्षमा, आर्जव, मार्दव, आदि सभी अंग संयम पूर्वक ही पालन किये जा सकते है। जैसे क्षमा में क्रोध का संयम किया जाता है, मार्दव में कठोर परिणामों का संयम किया जाता है, आर्जव में मायाचार का संयम निहित है वैसे ही सत्य में मिथ्या का नियमन आवश्यक है।सारांश यह है कि जैसे माला के प्रत्येक पुष्प में सूत्र पिरोया होता है वैसे ही धर्म के सभी अंगो में संयम स्थित है। मन, वचन और काय के योग को संयम कहते हैं और कोई भी सत्कार्य त्रि-योग संभाले बिना नहीं होता। कार्य की सुचारुता तथा पूर्णता त्रि-योग पर निर्भर है और त्रि-योग का किसी पवित्र लक्ष्य पर एकीभाव ही संयम है। इसी को सांकेतिक अभिव्यक्ति देते हुए 'इन्द्रियनिरोध: संयम:' —कहा गया है।

इन्द्रियों की प्रवृत्ति बहुमुखी है। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सभी इन्द्रियों के धर्म (स्वभाव) सहायक होते है तथापि क्रिया सिद्धि के लिए उन्हें संयत तथा केन्द्रित रखना आवश्यक होता है। यदि कार्य करते समय इन्द्रियसमूह इधर-उधर दौड़ता रहेगा, तो यह स्थिती ठीक वैसी ही होगी जैसी रथ में जुते हुए विभिन्न दिशाओं में दौड़ने वाले अश्वों से उत्पन्न हो जाती है। ऐसे रथ में जुते हुए विभिन्न दिशाओं में दौड़ने वाले अश्वों से उत्पन्न हो जाती है। ऐसे रथ में बैठा हुआ यात्री कभी निरापद नहीं रह सकता। नितिकारों ने तो यहां तक कहा है कि यदि पांचों इन्द्रियो में से किसी एक इन्द्रिय मे भी विकार हो जाए तो उस मनुष्य की बुद्धि-बल -शक्ति वैसे ही क्षीण हो जाती है जैसे छिद्र होने पर कलश में से पानी निकल जाता है। 'पंचेन्द्रियस्य मर्त्यस्य छिंद्र चेदेकमिन्द्रियम् ततोऽस्य स्रवति प्रज्ञा हते: पात्रा हते: पात्रादिवोदकम्' फिर जिन मनुष्यों की इन्द्रिय-क्षुधा इतनी बढ़ी हुई हो कि रात दिन पांचो इन्द्रियों से भोगोका आस्वादन करते रहें उनमें विनाशके चिन्ह दिखाईदें, पतन होने लगे तो क्या आश्चर्य ? इसी को लक्ष्यकर संयमकी स्थूल परिभाषा करते हुए इन्द्रिय निरोध को महत्वपूर्ण बताया गया है। संस्कृत भाषा, जिसका यह शब्द (संयम)है, बडी वैज्ञानिक भारती है। 'यभ्' धातु का अर्थ मैथुन या विषयेच्छा है और 'यम' धातु का अर्थ दमन या संयम है। 'भ' के पश्चात् 'म' वर्ण आता है। 'यभं' में जो फंस गया उसका उद्धार नहीं और जो 'यम'तक पहुंच गया, उसे यम का भय नहीं। अग्नि,अग्नि को जला नहीं सकती और यम,यम को मार नहीं सकता। इसी अशय से वैदिकों ने कहा कि 'कालं कालेन पीडियन्' -काल को ऋषि काल से ही पीड़ित करते थे। जो स्वयं संयमशील नहीं हैं, उन्हें ही यम का भय है। संयमी व्यत्कि तो घोषणा करता है कि 'न मृत्यवे अवतथे कदाचन'- मै कभी मृत्यु के लिये नही बना। संयम पालन से इच्छा-मृत्यु होती है।

शास्त्रकारों ने कहा है कि 'व्रतसमितिकषाणाणां दण्डानां तथेन्द्रियाणां पंचानाम्। धारणंपालननिग्रहत्याग जया: संयमो भणित:। अर्थात् व्रतों का धारण, समितियों का पालन, कषायों का निग्रह, दडों का त्याग तथा पांचों इन्द्रियो को जीतना उत्तम संयम कहा गया है। इस पर विचार किया जाए तो सम्पूर्ण मुनि चर्या संयम के अन्तर्गत परिलक्षित होती है। मुनि

के मूल गुणों की रक्षा संयम से ही सम्भव है।

संयम का पालन अपने आध्यात्मिक कोष का संवर्धन है। जैसे संसार में लोग आर्थिक उपार्जन कर 'बैंक-बैलेंस' बढाते हैं, वैसे ही संयमी अपनी आत्मा को शुभोपयोग में लगाने वाले द्रव्य को परिवर्धित करते हैं। जो लोग अपने रूप,बल,पराक्रम,बुध्दि तथा वीर्य को संसार में लगाते हैं, वे मानो अपनी पूंजी को जुए में हार रहे हैं। इन्द्रिय-विषयों ने रूप-राग की जो चौपड़ बिछा रखी है, । उस पर उनके सद्गुण,सद्वित्त दांव पर लग रहे है, परन्तु आश्चर्य इस बात का है कि विषय-द्यूत में अपनी पूंजी को हार कर भी, गंवा कर भी लोग दुःखी नहीं होते।साधारण जुए में तो पराजित को दुःख होता देखा जाता हैं, परन्तु जो संयमी हैं उनका धन सुरक्षित रहता है।

संयम से जो शक्ति प्राप्त होती है,संचय होता है वह मानव-जीवन को ऊंचा उठाता है। असंयम और संयम में यही मुख्य भेद है। असंयम सीढियों से नीचे उतरने का मार्ग है और संयम ऊपर जाने का। 'उन्नतं मानसं यस्य भाग्यं तस्य समुन्नतम्'- जिसका मन ऊंचा होता है उसका परिणाम शुभ होता है, और मन की उच्चता परिणामों पर निर्भर है। संसार के प्राणियों को संचय की, परिग्रह की आदत है, परन्तु संयम-रुप सुपरिग्रह का संचय करने की ओर उनका ध्यान नहीं है। यदि हम संयम का संचय करने लगें तो आज के बहुत से प्रभावों की दुष्ट अनुभूति से बच सकते हैं।

संयम के विरोधी गुणों का वर्गीकरण करें तो पता चलेगा कि भोग,लोभ,व्याभिचार,अब्रह्मचर्य,मिथ्याभाषण इत्यादि शतशः ऐसे दुर्व्यसन हैं,जिन्होंने आज के मानव-जीवन को दबोच रखा है। संयम न रखने वाले इनसे बहुत दुःखी हैं। यदि संयम धारण करलें तो, इन दुर्व्याधियों से मुक्त हो सकते हैं। अनावश्यक खाने-पहनने की वस्तुओं का संचय करने से मनुष्य पर आर्थिक भार बढता हैं और यही सारे अनर्थों की जड़ है। आज के मानव नें अपनी आवश्यकताए इतनी असंगत बना ली हैं कि यह अपने ही बुने जाल में फंस गया है। इनसे त्राण का मार्ग संयम है। परिग्रह-परिमाण भी संयम का ही अंग है।

जैसे सुरक्षित धन संकट के समय काम आता है, वैसे ही संयम मनुष्य-जीवन की प्रगति में सदैव सहायता करता है। जिसने संयम को अपना मित्र बना लिया है, उसके सभी मित्र बनने को तैयार रहते हैं; क्योंकि संयमी की आवश्यकताऐं सीमित होती हैं, उसके साह्चर्य से कोई परेशान नही होता।

-संयम के बिना जो सुखपूर्वक संसार से पार उतरना चाहता हैं, वह बिना नौका के समुद्र तैरने की अभिलाषा रखता है। संयम महान् तपस्या है, महान् व्रत है और पुरुष के पौरूष की परीक्षा है। संयम-मणि को बलवान् ही धारण करते हैं, दुर्बलों के हाथ से उसे विषय-भोगरूप दस्यु छीन ले जाते हैं। संयम का नाम ही उत्तम चारित्र है। मनुष्य को मनःसंयम, वाक्संयम और काय-संयम रखना चाहिये। मनःसंयम से इन्द्रिय-निरोध होता है। वाक्-संयम से मिथ्याभाषण दोष तथा कायसंयम से असन्मार्ग-गामिता की निवृत्ति होती है। संयम के बिना जप,तप,ध्यान, सामायिक व्यर्थ हैं। संयम-साधना से ही उत्तम मोक्षसिद्धि प्राप्त होती है।

श्री महावीर स्वामी स्तवन (२४)

(वींछीया नी......... राह)

विवेचन : श्री जयानंदविजयजी म.

हां रे लाला जोग जुगत जोई जुगति सुं, ल्चाणो मम दिल रे लाला।
उपशम रस नयनाम्बुजे, माहन अविचल मल्ल रे लाला। जोग ॥ १ ॥

गुरूदेवश्री ने चरम तीर्थपति श्री महावीर प्रभु के स्तवन में उनके गुणों की महिमा के साथ उनके देह की उत्तमता का वर्णन सुंदर रीति से किया है।

हे देवाधिदेव ! आपश्री के मन, वचन, काया रूप तीनों योगों को युक्त अर्थात् सुयोग्य रीति से समाचरीत देख कर युक्ति पूर्वक मेरा हृदय/मेरा दिल आपके प्रति आकर्षित हुआ है।

आपश्री की आंखों में/नयनों में/नयनाम्बुजों में उपशम रस की धारा प्रवर्तमान है। संगम जैसे अपकारी पर भी आपश्री ने उसका हित न कर सकने के कारण दो अश्रु बिन्दु गिराये थे ऐसी आपकी उपशम धारा है।

माहन (माहण) का/ मत मारो का सर्वोत्कृष्ट उपदेश जीवन में अपनाकर आचरण में रख कर उपदेश दाता एक मात्र आप ही है।

अविचल मल्ल अर्थात इस जगत में भौतिक कुश्ती करनेवाले मल्ल एवं अष्ट कर्मरूपी मल्ल सभी को हराने के कारण आप किसी से विचलित नहीं होने से अविचल मल्ल आप ही है।

हां रे लाला स्वप्नांतर विराग मां रे, टले नहीं अटल्ल रे लाला।
मोहनी में नहीं मोहीयो, क्षमा छे बहु निसल्ल रे लाला। जोग० ॥ २ ॥

हे देवाधिदेव ! आपश्री विराग भाव से स्वप्न में भी दूर न होने से अटल है।

मोहराय की फैलाई हुई जो जाल वह संसार की मोहिनी के नाम से प्रख्यात है उस मोहिनी में आपश्री लेश मात्र मोहित न बनें एवं आपश्री की क्षमा निःशल्य है। बाल्यावस्था में देव से लगाकर गोशालाक तक के अनेक प्रसंगो में आपश्री की क्षमा के दर्शन निःशल्यता पूर्वक हो रहे हैं।

हां रे लाला वदन कमल विकसित भलो, देखी मोह्या भविजन वृंद रे लाला।
जाने लपट्यो जोर सुंगंध ग्रहण अलि वृंद रे लाला। जोग०। ॥ ३ ॥

गंध ग्रहण करने हेतु भ्रमरों का वृंद जिस प्रकार कमल के चारों ओर से लिपट जाता है। उसी प्रकार आपश्री के वदन कमल की अत्यंत विकसितावस्था को देखकर मोहित बनकर भव्यजनों का समुदाय आपश्री के चारों ओर लिपट गया है। भव्यजनों के द्वारा आपश्री निरन्तर सेवित हो। आपके चारों ओर भक्तगण हमेशा रहते हैं।

आपश्री की नयन रम्य मुख-मुद्रा धुवड़ जैसे आत्माओं को भी देखने का सुअवसर प्राप्त नहीं होता।

हां रे लाला आसन सौम्य अवलोकिने, रह्यो नहीं कांई, रोष रे लाला।
भाल स्थल भल भलकतो तेथी सूर्य शशी संतोष रे लाला। जोग ०॥ ४॥

आपश्री का आसन सौम्य देखकर अर्थात् आपश्री के बैठने के समय की जो मुखमुद्रा है वह इतनी सौम्य है कि देखने वालों का रोष सर्वथा दूर हो जाता है।

सूर्य-चंद्र ऐसा विचार करते थे हम इस जगत को प्रकाश देखकर जगत में पूजनीय बने हैं और हम जिनके चरणों में नमस्कार करते हैं वे देवाधिदेव हमारे तेज से क्या अधिक तेजवाले हैं ? ऐसी भावना से मूल विमान में आपश्री के पास आये। पर आपश्री के भाल के तेज के सामने सूर्य चंद्र के मूल विमान का तेज भी हीन लगा सूर्य चंद्र को। तब उन्हें संतोष हुआ कि हम जिनके चरणों में नमस्कार करते है वे द्रव्य प्रकाश में भी हमसे अधिक है। भाव प्रकाश मे तो तीर्थंकर एवं सामान्य केवलज्ञानी भी अधिक ही होते हैं।

हां रे लाला वीर जोया ब्रह्मांड में, वीर न एवो वृद्ध रे लाला।
भगवई त्रिशला सुत भलो, सूरि राजेन्द्र सुप्रसिद्ध रे लाला। जोग ०। ५।

ब्रह्मांड में, पृथ्वी तल पर अनेक शूर, वीर, महात्मा आदि देखे। पर वृद्ध अर्थात् महान् महावीर तो एक आप ही इस विश्व में दिखाई दीए हैं।

दूसरें सभी वीर भौतिक शत्रुओं के हनन करने से वीर शूर आदि कहलाये हैं। आपश्री ने तो भौतिक शत्रुओं के द्वारादि किये गये कष्टों को समभाव पूर्वक सहन कर, उनका भी हित चिंतन कर आत्मिक शत्रुओं का हनन किया है। अतःआपश्री को (वृद्ध)महावीर कहा है, वह सुयोग्य है।

भगवती त्रिशला माता के पुत्र श्री महावीर वर्धमान स्वामी इस जगत में सुप्रसिद्ध हैं।

दहेज प्रथा समाज के लिये कलंक है। जहां शुद्धि है, वहां सिद्धि है।

कर्मों के हाथों से कौन-कौन पराजित हुए, उनका इतिहास जानने से क्या फायदा ? खैर जानकारी के लिये भले ही, उस दर्द-भरे व पराजय की आहों से कलंकित इतिहास को जान लो; परन्तु जानकारी तो उनके इतिहास की करना है, जिन्होंने कर्मों को चकनाचूर कर दिया। कर्मों पर विजय प्राप्त की। ऐसे उदाहरण, ऐसा इतिहास अपने पास रखो, जिससे वीरता की प्रेरणा मिलती रहे। कर्मों का भय दूर हो जाय और हम विजयी बनें।

स्वाध्याय : एक चिन्तन

उपाध्याय अमरमुनि

भारतीय–संस्कृति में स्वाध्याय का स्थान बहुत ऊँचा एवं पवित्र माना गया है। हमारे पूर्वजों ने जो ज्ञानराशि एकत्रित की है, और जिसे देखकर आज समस्त संसार चमत्कृत है, वह स्वाध्याय के द्वारा ही प्राप्त हुई है। भारत जब तक स्वाध्याय की ओर से उदासीन न हुआ, तब तक वह ज्ञान के दिव्य प्रकाश से जगमगाता रहा।

पूर्वकाल में भारतीय विद्यार्थी गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त कर जब विदा होता था, तो उस समय आशीर्वाद के रूप में आचार्य की ओर से यही महावाक्य मिलता था कि – ''स्वाध्यायान्म प्रमदः।'' हे प्रिय वत्स। 'तू कभी भूलकर भी स्वाध्याय करने में प्रमाद न करना।' कितना सुन्दर उपदेश है? स्वाध्याय के द्वारा ही हित और अहित का ज्ञान होता है, पाप और पुण्य का पता चलता है, कर्तव्य–अकर्तव्य का बोध होता है। स्वाध्याय हमारे अंधकार पूर्ण जीवन–पथ के लिए दीपक के समान है। जिस प्रकार दीपक के द्वारा हमें मार्ग के अच्छे और बुरेपन का पता चलता है, और तदनुसार हम खराब, ऊबड़–खाबड़ मार्ग को छोडकर अच्छे–साफसुथरे पथ पर चलते हैं, ठीक उसी प्रकार स्वाध्याय के द्वारा हम धर्म और अधर्म का पता लगा लेते हैं। और जरा विवेक का आश्रय लें, तो अधर्म को छोड़कर धर्म के पथ पर चलकर जीवन को प्रशस्त बना सकते हैं।

शास्त्रकारों ने स्वाध्याय को नन्दन–वन की उपमा दी है। जिस प्रकार नन्दन–वन में प्रत्येक दिशा में भव्य–से–भव्य दृश्य मन को आनन्दित करने के लिए होते हैं, वहाँ जाकर मनुष्य सब प्रकार के दुःख एवं क्लेश–सम्बन्धी झंझट भूल जाता है, उसी प्रकार स्वाध्याय रूपी नन्दन–वन में भी एक–से–एक बढ़कर सुन्दर एवं शिक्षाप्रद दृश्य देखने को मिलते हैं, तथा मन दुनियादारी के झंझटों से मुक्त होकर एक अलौकिक आनन्द–लोक में विचरण करने लगता है। स्वाध्याय करते समय कभी महापुरुषों के जीवन की दिव्य एवं पवित्र झाँकी आँखों के सामने आती है, कभी स्वर्ग और नरक के दृष्य धर्म तथा अधर्म का परिणाम दिखलाने लगते हैं। कभी महापुरुषों की अमृतवाणी की पुनीत धारा बहती हुई मिलती हैं, कभी तर्क – वितर्क की हवाई उड़ान बुद्धि को बहुत ऊँचे अनन्त आकाश में उड़ा ले जाती है और कभी–कभी श्रद्धा भक्ति एवं सदाचार के ज्योतिर्मय आदर्श हृदय को गद्‌गद् कर देते हैं। शास्त्र – वाचन हमारे लिए 'यत् पिण्डे तद् ब्रह्माण्ड़े' का आदर्श उपस्थित करता है। जब कभी आपका हृदय बुझा हुआ हो, अपने चारों ओर अन्धकार–ही–अन्धकार घिरा नजर आता हो, कदम–कदम पर विघ्न–बाधाओं के जाल बिछे हुए हों, तो आप किसी उच्च कोटि के पवित्र आध्यात्मिक – ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। आपका हृदय ज्योतिर्मय हो जाएगा, चारों ओर प्रकाश

ही प्रकाश फैला नजर आता जाएगा, विघ्न–बाधाएँ चूर–चूर होती मालूम होंगी और एक महान अलौकिक स्फूर्ति आपको प्रगति के पथ पर अग्रसर करती हुई प्राप्त होगी।

योगदर्शन के भाष्यकार महर्षि व्यास भी स्वाध्याय के आदर्श पुजारी रहे हैं। वे परमात्म – ज्योति के दर्शन पाने का एक मात्र साधन स्वाध्याय ही बतलाते हैं –

स्वाध्यायाद् योगमासीत् योगात्स्वाध्यायमामनेत्।
स्वाध्याय – योगसंपत्या परमात्मा प्रकाशते।।

– योग दर्शन १/८ व्यास भाष्य

स्वाध्याय से योग और योग से स्वाध्याय की साधना होती है। जो साधक स्वाध्याय मूलक योग का अच्छी तरह से अभ्यास कर लेता है, उसके सामने परमात्मा – ज्योति प्रकट हो जाती है।

भगवान् महावीर तो स्वाध्याय के प्रबल पक्षपाती रहे हैं। बारह प्रकार की तप–साधना में स्वाध्याय का स्थान रखा गया है। और, स्वाध्याय–तप को बहुत ऊँचा अन्तरंग तप माना गया है। अपने अंतिम प्रवचन उत्तराध्ययन सूत्र में कहते हैं –

'सज्झाएणं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ।' –

स्वाध्याय करने से ज्ञानावरण कर्म का क्षय होता है। ज्ञान का अलौकिक प्रकाश जगमगा उठता है। आप देखते हैं – जीवन में दुःख है, अज्ञानजन्य ही हैं। जितने भी पाप, बुराइएँ दिखाई दे रही हैं, सबके मूल में अज्ञान ही छुपा बैठा है। अस्तु, यदि अज्ञान का नाश हो जाए, तो फिर किस चीज की कमी रह जाती है? मनुष्य के अन्तर्मन में ज्ञान, विवेक, विचार शक्ति का प्रकाश जगा कि, उसने संसार का समस्त ऐश्वर्य पाया –

जं अन्नाणो कम्मं खवेइ बहुया ह वासकोडीहिं।
तं नाणी तिहिं गुत्तो, खवेइ उसासमित्तेण।। ११३

– संथारपइन्ना

– अज्ञानी साधक करोड़ वर्षों की कठोर तपः साधना के द्वारा जितने कर्म नष्ट करता है, ज्ञानी साधक मन, वचन और शरीर को वश में करता हुआ उतने ही कर्म एक श्वास मात्र में क्षय कर देता है।

स्वाध्याय वाणी की तपस्या है, इसके द्वारा हृदय का मल धुलकर साफ हो जाता है। स्वाध्याय अन्तः प्रेरणा है। इसी के अभ्यास से बहुत से पुरुष आत्मोन्नति करते हुए आत्मा से परमात्मा हो गए हैं। अन्तर् का ज्ञानदीप स्वाध्याय के बिना प्रज्ज्वलित हो ही नहीं सकता –

यथाग्निर्दारुमध्यस्थो, नोत्तिष्ठेन्मथनं विना।
विना चाभ्यासयोगेन, ज्ञानदीपस्तथा नहिं।।

– योगशिखोपनिषद्

– जैसे लकड़ी में रही हुई अग्नि मंथन के बिना प्रकट नहीं होती है, उसी प्रकार

ज्ञानदीपक, जो हमारे भीतर ही विद्यमान है, स्वाध्याय के अभ्यास के बिना प्रदीप्त नहीं हो सकता हैं।

अब यह विचार करना है, यथार्थ में स्वाध्वाय क्या है? स्वाध्वाय शब्द में अनेक अर्थ हैं –

अध्ययनं अध्याय: शोभनोध्याय: स्वाध्याय: – आव. अ. ४ सु + अध्याय, अर्थात् सुष्ठु अध्याय = अध्ययन का नाम स्वाध्याय है। निष्कर्ष यह है, कि आत्म–कल्याणकारी पठन–पाठन रूप श्रेष्ठ अध्ययन का नाम ही स्वाध्याय है।

स्थानांग सूत्र के टीकाकार अभयदेव सूरी स्वाध्याय का अर्थ करते हैं – सुष्ठु भलीभाँति, आ–मर्यादा के साथ अध्ययन करना ही स्वाध्याय है – "सुष्ठु आ मर्यादया अधीयतेति स्वाध्याय: ।"

वैदिक विद्वान् स्वाध्याय का अर्थ करते हैं – स्वयमध्ययन। किसी अन्य की सहायता के बिना स्वयं ही अध्ययन करना, अध्ययन किए हुए का मनन और निदिध्यासन करना। दूसरा अर्थ है – 'स्वस्यात्मनोऽध्ययनम्' स्वयं का अध्ययन करना और देख–भाल करते रहना कि अपना जीवन ऊँचा उठ रहा है या नहीं ?

जैन शास्त्रकारों ने स्वाध्याय के पाँच भेद बतलाए हैं – वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा।

गुरु के मुख से सूत्रपाठ लेकर सूत्र जैसा हो वैसा ही उच्चारण करना वाचना है। वाचना के द्वारा सूत्र के शब्द शरीर की पूर्ण रूप से रक्षा की जाती है। अतएव हीनाक्षर, अत्यक्षर, पदहीन, घोषहीन आदि दोषों से बचने की सावधानी रखनी चाहिए।

स्वाध्याय का दूसरा भेद पृच्छना है – सूत्र पर जितना भी अपने से हो सके तर्क–वितर्क, चिन्तन–मनन करना चाहिए, और ऐसा करते हुए, जहाँ भी शंका हो, गुरूदेव से समाधान के लिए पूछना चाहिए। हृदय में उत्पन्न हुई शंका के रूप में रखना ठीक नहीं होता।

सूत्र वाचना विस्मृत न हो जाए, एतदर्थ सूत्र की वारवार गुणनिका = परिवर्तना करना, परिवर्तना है।

सूत्र वाचना के सम्बन्ध में तात्त्विक चिन्तन करना अनुप्रेक्षा है। अनुप्रेक्षा स्वाध्याय का महत्त्वपूर्ण अंग है। विना अनुप्रेक्षा के ज्ञान चमक ही नहीं सकता।

जब सूत्र – वाचना, पृच्छना, परिवर्तना और अनुप्रेक्षा के बाद तत्त्व का वास्तविक रूप सुदृढ़ हो जाए, तब जन–कल्याण के लिए धर्मोपदेश करना, धर्म–कथा है।

भगवान महावीर ने स्वाध्याय का कितना सुन्दर वैधानिक क्रम रखा है? शास्त्रों के शब्द और अर्थ दोनों अंगों की रक्षा के लिए कितनी सुन्दर योजना है? यदि उपर्युक्त पद्धति से शास्त्रों का स्वाध्याय–अध्ययन किया जाए तो साधक अवश्य ही ज्ञान के

क्षेत्र में अद्वितीय प्रकाश पा सकता है। कुछ भी अध्ययन न करके धर्म–कथा के मंच पर पहुँचने वाले धर्मोपदेष्टा जरा इस ओर लक्ष्य दें कि धर्म कथा का नम्बर कौन–सा है?

आजकाल स्वाध्याय के नाम पर बिल्कुल अर्थहीन परम्परा चल रही है। आज के स्वाध्यायी लोग, स्वाध्याय का अभिप्राय ही नहीं समझते हैं। किसी धर्म पुस्तक का नित्य पाठ कर लेना, न तो शुद्ध उच्चारण की ओर ध्यान दिया जाता है और न अर्थ का ही कुछ चिन्तन–मनन होता है। स्वाध्याय के लिए केवल शब्द शरीर को स्पर्श कर लेने से ही काम नहीं चल सकता। यद्यपि शुद्ध उच्चारण मात्र से कुछ लाभ अवश्य होता है, क्योंकि शब्दोंके शुद्ध उच्चारण से भी भावों का स्पन्दन तरंगित होता है, और उसका जीवन पर प्रभाव पड़ता है। परन्तु, हम पूरा लाभ तभी उठा सकेंगे, जबकि पाठ करते समय पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा का भी ध्यान रखें।

स्वाध्याय में बल पैदा करने के लिए वर्तमान युग के अध्ययन सम्बन्धी ग्रन्थों में कुछ नियम ऐसे हैं, जिन पर विचार करना अपेक्षित है। यदि अच्छी तरह से निम्नोक्त नियमों पर ध्यान दें, तो स्वाध्याय का अपूर्व आनन्द प्राप्त किया जा सकता है –

१. **एकाग्रता :** जब हम स्वाध्याय कर रहे हों, तब हमारा ध्यान चारों ओर से हटकर पुस्तक के शब्दों और अर्थों की ओर ही होना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है, कि हम जो कुछ मुख से पाठ करें, उसे अपने कानों से भी ध्यान पूर्वक सुनते जाएँ। जिह्वा और श्रोत्र–दो इन्द्रियों के एक साथ काम करने से मन अवश्य एकाग्र हो जाता है। अच्छा हो, यदि पाठ करते समय प्रत्येक पंक्ति को ठहर–ठहर कर दो–तीन बार पढ़ा जाए।

२. **नैरन्तर्य :** स्वाध्याय में जहाँ तक हो सके, अन्तर नहीं होना चाहिए। थोड़ा बहुत स्वाध्याय नित्य–नियम पूर्वक करते रहना चाहिए। परम्परा की कड़ी टूटते ही स्वाध्याय की वही हालत होती है, जैसे सांकल की कड़ी टूटने पर सांकल की होती है।

३. **विषयोपरति :** स्वाध्याय के लिए ग्रन्थों का चुनाव करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि हमारा उद्देश्य सांसारिक विषय–वासनाओं के जीवन से ऊपर उठना है। अतः राग, द्वेष, श्रृंगार, घृणा आदि के भाव बढ़ाने वाली पुस्तकें न पढ़कर सदाचार, भक्ति और धर्म–सम्बन्धी पुस्तकें ही पढ़नी चाहिए।

४. **प्रकाश की उत्कण्ठा :** स्वाध्याय करते समय मन में यह दृढ़ विश्वास होना चाहिए, कि पाठ के द्वारा हमारी अन्तःस्थ आत्मा में प्रकाश फैल रहा है। संकल्प का बल महान् होता है। अतः स्वाध्याय के समय शुद्ध संकल्प अवश्य ही अन्तर्ज्योति प्रदान करेगा।

५. **स्वाध्याय का स्थान :** स्वाध्याय के लिए पवित्र एवं शुद्ध वातावरण से सम्पन्न स्थान हो। कोलाहल एवं गन्दे दृश्योंवाला स्थान स्वाध्याय के लिए सर्वथा अनुपयुक्त होता है।

ज्ञान कसौटी - २३

संकलन - महेन्द्र जे. संघवी - थाने

(स्वाध्यायी पाठक निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पहले क्रमशः एक कागज पर लिखें फिर इसी अंक में पृष्ठ ४४. पर दिये गए उत्तरों से तुलना करें। - **सम्पादक)**

५५१) भगवान ऋषभदेव की माता का नाम क्या था?
५५२) अंतिम केवली कौन हुए?
५५३) ध्यान के प्रकार व नाम?
५५४) वर्तमान २४ तीर्थंकरों में चक्रवर्ती होकर तीर्थंकर पद किस-किसने पाया?
५५५) पांचवा व छठा आरा कितने वर्ष का है?
५५६) चौदह पूर्व का सार कौन-सा मंत्र है?
५५७) गौडवाड पंचतीर्थ के नाम बताईये!
५५८) चैत्यवंदन करते समय कौन-सी मुद्रा में बैठना चाहिये?
५५९) सामायिक कितने दोषों को टालकर करनी चाहिये?
५६०) लोगस्स सूत्र का दूसरा नाम क्या है?
५६१) भगवान सुविधीनाथजी का दूसरा नाम?
५६२) भगवान नेमिनाथ का दूसरा नाम?
५६३) सात क्षेत्र के नाम बतायें?
५६४) जैन को प्रतिदिन करने योग्य छः कर्तव्य कौन-से हैं?
५६५) श्री सिद्धाचल तीर्थ का प्रथम उद्धार किसने करवाया था?
५६६) श्री सिद्धाचल तीर्थ का वर्तमान उद्धार किसने करवाया?
५६७) अजित-शान्ति स्तवन किसने बनाया?
५६८) अजित-शान्ति स्तवन में कौन से तीर्थंकर परमात्मा की स्तवना की गयी है?
५६९) तत्वार्थसूत्र की रचना किसने की?
५७०) दशवैकालिक-सूत्र किसने बनाया?
५७१) राजा श्रीपाल ने किसकी आराधना की थी?
५७२) केशी श्रमण ने किस राजा को नास्तिक से आस्तिक बनाया था?
५७३) उवसग्गहरं स्तोत्र की रचना किसने की?
५७४) जगचिन्तामणि चैत्यवंदन किसने बनाया?
५७५) आचार्य श्री हरिभद्रसूरिजी ने कितने ग्रंथों की रचना की?

शाश्वत धर्म के ग्राहक बनाकर सम्यग्ज्ञान का प्रचार और प्रसार करें।

स्वास्थ्य चर्चा

सोच देखें : टॉनिक या खून ?

डा. जागृति बहन दवे

आज के प्रगतिशील युग ने आधुनिकीकरण के नाम पर खुली लूट और ठगविद्या चलाने के लिए 'टॉनिक' यानी 'शक्तिवर्धक औषधि' को भी नहीं छोड़ा। लोगों को समय और धैर्य के अभाव में अपनी तकलीफों का येन-केन प्रकारेण इलाज चाहिये; इतना ही नहीं बीमारी के बाद या शारीरिक श्रम-के -अतिरेक-से अशक्ति- अनुभव हो तब भी 'आराम' और अच्छा पोषक आहार ही इलाज है। यह सत्य वे स्वीकार नहीं करते। यदि स्वीकार करें तो भी आज के दैनिक-तेज-रफ्तार जीवन से कदम मिलाने के स्थान पर उन्हें अशक्त बन कर पड़े रहना नहीं सुहाता। परिणाम- स्वरुप वे शक्तिवर्धक दवाओं की ओर आकर्षित होते हैं और 'जितनी आधुनिक, उतनी ही अधिक प्रभावशाली' यह मानने से भी वे नहीं चुकते। एक दवा का नाम आ जाए फिर उसी दवा का नाम डॉक्टर फिर से लिख दे तो भी 'यह तो वही दवा है' सोच कर उन्हें उस दवा के प्रति घृणा होती है और यदि कोई नयी दवा मिल जाए तो खुश हो जाते हैं। ऐसी मानसिकता वाली हमारी प्रजा शक्ति बढ़ाने के लिए कोई भी कीमत चुकाने के लिए तैयार हो जाती है। दूसरी ओर कई शुद्ध शाकाहारी लोग भी जीव- दया के कारण ही शाकाहारी होते है।वास्तव में शाकाहार मांसाहार की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ है' इस सत्य से वे लोग अपरिचित होते हैं और मन के किसी कोने में 'मांसाहारी लोग अधिक ताकतवर होते हैं, इसीलिए मांसाहार से शक्ति जल्दी ही आती है' ऐसी मान्यता भी वे रखते हैं।

डॉक्टर भी दवा- कंपनियों के प्रलोभनकारी और भड़कीले विज्ञापनों की ओर खिंच कर वैज्ञानिक हकीकतें भूल जाते हैं। और याद रखें भी तो मरीज़ों की नयी दवाओं की माँग से जाने- अनजाने नयी-नयी दवाओं की सलाह देने लगते हैं ओर सरलता से आकृष्ट ग्राहक और दूसरी ओर बढ़ती हुई मँहगाई के कारण दवा की कंपनियों ने एक नया ही उपाय सोचा। प्राणिज प्रोटीन की रचना मानव- शरीर के प्रोटीन से मिलती-जुलती होने से अँतड़ियों में उसका शीषण आसानी से होता है और इसलिए यदि दवा में हीमोग्लोबीन मिलाया जाए तो मरीज के रक्त में हिमोग्लोबीन के प्रतिशत शीघ्रता से बढ़े, वे इस प्रकार की यह दलील भी लाये जो देखने में सही भी लगे और जल्दी ही गले भी उतर जाए। प्रणियों के कलेजे (लीवर) के जठर (स्टमक) का अर्क (एक्स्ट्रेक्ट) भी प्रभाशाली टॉनिक सिद्ध हो सकता है ऐसी मान्यता से उन्होंने प्राणियों के रक्त, लीवर- एक्स्ट्रेक्ट और स्टमक एक्ट्रेक्ट में से दवाएँ बनायी और आश्चर्य है कि ये महँगी दवाएँ बाजार से फटाफट उठने लगीं। अब कंपनियों के साहित्य में प्रस्तुत की गयी यह दलील वास्तव में कितनी मूर्खतापूर्ण और छल-कपटपूर्ण है यह दृष्टव्य है।

प्राणिज हीमोग्लोबीन

सामान्यत: रोज खाये जाने वाले आहार में स्थित कुल आयर्न में-से मात्र १० से १५

प्रतिशत आयर्न का ही शोषण किया जा सकता है। दवाओं में प्राणिज रक्त अर्थात हीमोग्लोबीन मिलाने से हिम के रुप में स्थित आयर्न का ३० प्रतिशत शोषित होता है? यानी कि रक्त में मिलता है फर्ज कीजिये कि यह बात सच है फिर भी यह सोचना चाहिये कि प्राणिज हिमोग्लोबीन में आयर्न कितने प्रतिशत होता है? आयर्न की दैनिक आवश्यकता पूरी करने के लिए कितना हीमोग्लोबीन चाहिये? इसके लिए आवश्यक कुल हीमोग्लोबीन की कीमत कितनी होगी? इस तरह का हिम (आयर्न) लेने से अन्य कोई नुकसान है या नहीं? और सबसे महत्वपूर्ण तो यह बात है कि यह रक्त कहाँ से प्राप्त किया जाता है? इन सभी प्रश्नों के उत्तर आँखे उघाड़ने वाले है:—

एनीमिया अर्थात् पांडु रोग (खून- की- कमी) से पीड़ित रोगी की चिकित्सा के लिए दैनिक १०० मि. ग्राम आयर्न लेना जरुरी है। सामान्य पशुओं के हीमोग्लोबीन में आर्यन की मात्रा निम्नलिखित है:—

पशु का नाम	आयर्न मि.ग्रा. हिमोग्लोबीन
गाय	२.८
घोड़ा	७.७७
कुत्ता	५.००
बकरा	३.७५

तथाकथित प्रभावशाली हीमोग्लोबीन टॉनिक में हीमोग्लोबीन प्रति १५ मि. ली. दवा में (सामान्यत: १ खुराक) रक्त २५० मि. ग्रा. से २ ग्राम तक होता है। इतने हीमोग्लोबीन में-से केवल ०.७५ मि. ग्रा से ५ मि. ग्रा. जितना ही आयर्न निकलता है और उसमें-से भी मात्र ३० प्रतिशत ही शोषित करना है। इस प्रकार ऐसे टॉनिक आवश्यकता पूरी करने में पंगु सिध्द होते है। इसकी कीमत देखिये। हीमोग्लोबीन टॉनिक के एक डोज की औसतन कीमत दो रुपये यां अधिक भी होती है। वास्तव में १०० मि.ग्रा. आयर्न हीमोग्लोबीन टॉनिक में-से लेना चाहिये; तो लगाईये हिसाब, कितनी कीमत होगी? इतना ही नही, इसके लिए मिलने वाला रक्त कत्लखानों से प्राप्त किया जाता है और जिस हिमोग्लोबीन का उपयोग कुत्ते और मुर्गों के पालन पोषण के लिए विकसित देशों में किया जाता है, वह यहाँ मनुष्य के लिये उपयोग मे लाया जाता है।

जठर की दीवार में इंट्रिंजिक फैक्टर* नाम का एक तत्व है, जो लोहतत्व के शोषण के लिये अनिवार्य है और यदि उस तत्व की कमी जन्म से ही हो तो ऐसा व्यक्ति पांडुरोग से ग्रस्त होता है। जब तक बाह्यरुप से इस तत्व की पूर्ति न की जाये, तब तक आयर्न का शोषण नहीं होता। यह सच होने के बावजूद पूरी तरह तंदुरुस्त व्यक्ति को अलग से इंट्रिंजिक फैक्टर आहार में देने से उसके शरीर में लोहतत्व अधिक शीघ्रता से शोषित होते हैं, यह बात गलत है। टॉनिक में स्टमक-एक्स्ट्रेक्ट मिलाने के बाद इंट्रिंजिक फैक्टर मिलाने का कोई उचित कारण नहीं है; क्योंकि भारतीय प्रजा में इस तत्व की कमी होने का कहीं कोई उल्लेख

नहीं है। लीवर 'विटामिन-बी' का संग्रहस्थान होने से लीवर-एक्स्ट्रेक्ट टॉनिक में मिलाने से शीघ्रता से शरीर को प्राप्त होता है, विटामिन-बी और फॉलिक एसिड मिलता है ऐसा कहा जाता है। वास्तव में रिफाइन किये हुए यकृत-सार में फॉलिक एसिड नहीं रहता और विटामिन-बी तथा फॉलिक एसिड तो शुद्ध रुप में अधिक सस्ते मिल जाते हैं, तो फिर ऐसे मँहगे टॉनिक की क्या आवश्यकता? उपर्युक्त तत्वों में ऐसे प्रोटीन होते हैं जिनके मानव-शरीर की रचना से अलग होने के कारण ऍलर्जी होने का भय रहता है। प्राणिज तत्वों के होने से ऐसे टॉनिकों के हमारे देश की उष्ण जलवायु में सड़ जाने का डर रहता है। सड़ा हुआ टॉनिक जीवाणुओं की वृद्धि करने में सहायता करता है और परिणामस्वरुप शक्ति अर्जित करने के स्थान पर संक्रमण होने का खतरा ही विशेष रहता है। इतनी सच्चाइयाँ होने के बाद भी अंन्धाधुन्ध बिकने वाली ऐसी दवाओं से सावधान रहना जरुरी है। इसमें पैसे का अपव्यय होता है।विशेष लाभ नहीं होता और हानि होने की आशंका विशेष रहती है। इस प्रकार की कुछ दवाओं के नाम यहां प्रस्तुत हैं:

★ आमाशय के रस में पाया जाने वाला एक ग्लाइकोप्रोटीन जो बाह्य कारक(विटामीन-बी-१२) के अवशोषण के लिये आवश्यक है। (1) Bayer's Tonic (बेअर्स टॉनिक) Liver extract. (2) Nurrish (नरीश) Fish protein. (3) Olpro Hydrolysate.(ऑल्प्रो-हाइड्रोलिसेट) Meat protein (4) Revital (रिवाइटल) liver faction (5) orteptal (ऑरटेप्टाल) liver fraction (6) Dexorange (डेक्सोरेंज) Blood hemoglobin (7) Haem-up (हीम-अप)Blood hemoglobin. (8) Heptoglobin (हेप्टोग्लॉबिन) Proteolysed liver. (9) Iberol (आइबेरोल) Dessicated liver. (10) Livogen(लिवोजेन) Dessicated liver. (11) Ferrochelatte (फेरोकेलेट) Dessicated liver. (12) Plastules (प्लास्ट्रल्स) Fresh liver extract. (13) Probofex with Hemoglobin (प्रोबोफेक्स विद हीमोग्लोबीन) Blood Hameoglobin. (14) Surbex-T (सर्बेक्स-टी) Dessicated liver. (15) Neurotrat (न्यूरोट्रेट) Liver concentrate.

मुक्तक

दहेज

निकाह की 'आह' में चूर- चूर हुए सपन।
चन्दुरी के पहले ही ओढ लिया था कफन।
न हुआ तृप्त फिर भी दावानल दहेज का,
वह देवी- सी नारी हो गई जिंदा दफन।।

दिलीप धींग जैन

'उर्जा उत्पादन में पशुओं का योगदान'

– श्री पन्नालाल मुन्धड़ा

ऊर्जा मानव जीवन की प्रमुख आवश्यकता है। दिन प्रतिदिन के विभिन्न कार्यों में ऊर्जा के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। ऊर्जा के बल पर ही बड़े–बड़े कारखाने चलते हैं जिसमें हमारे दैनिक उपभोग की विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन होता है। उर्जा न हो तो इस भूतल पर जीना ही असम्भव हो जाये। इसलिए देश की उन्नति के लिए पर्याप्त मात्रा में उर्जा का मिलना अति आवश्यक है। ऊर्जा के अभाव में कोई भी क्रांति चाहे हरित क्रांति हो या औद्योगिक क्रांति, सफल नहीं हो सकती। अतः यदि कहा जाये कि ऊर्जा ही जीवन है तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं।

उर्जा की प्राप्ति के लिये कोयला, लिग्नाईट, पैट्रोलियम तथा परमाणुशक्ति का बहुत उपयोग किया जा रहा है। किंतु ये सभी पदार्थ शीघ्र ही अनुपलब्ध हो जायेंगे क्योंकि जहां पैट्रोलियम सिर्फ १५ वर्ष के लिए उपलब्ध होगा, वहीं गैस ६० वर्ष तथा कोयला और परमाणु शक्ति करीब १०० वर्ष तक।

इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि समाज की व्यवस्था एवं अवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए गैर पारम्परिक उर्जा स्त्रोतों पर विचार किया जाये। सूर्य, वायु, जल से अवश्य ही उर्जा मिल सकती है किन्तु फिर भी ग्रामीण अंचलों का यातायात, छोटे–छोटे खेतों में जुताई का काम या खेतों में खाद व कीटकनाशकों का कार्य इन उर्जा शक्तियों के द्वारा नहीं किया जा सकता एवं बिना कृषि के अन्न नहीं होगा, एवं बिना अन्न के जीवन।

इसलिए उपरोक्त गैर पारम्परिक उर्जा शक्तियों को बढ़ावा देते हुए हमें पशुओं से प्राप्त होनेवाली ऊर्जा का भी समुचित उपयोग करना होगा।

पशु शक्ति से संचलित परिवहन व्यवस्था गांवों की यातायात एवं कृषि उपयोगी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम ही नहीं, अपितु पारिस्थितिक दृष्टि से आदर्श भी है। एक साधारण भारतीय किसान के लिये बैल के माध्यम से हल जोतना आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद है। चूँकि भारतवर्ष के अधिकतर किसानों के पास थोड़ी भूमि है अतः यहाँ ट्रेक्टर से खेती करना व्यवहारिक नहीं है। कृषि सर्वेक्षणों से यह भी पाया गया है कि ट्रेक्टर द्वारा खेती करने से भूमि क्षरण होता है जिससे कि मिट्टी की ऊपरी सतह में पाये जानेवाले पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। बैल की सहायता से हल जोतकर इस नुकसान से बचा जा सकता है। कृषि सम्बन्धी कई अन्य ऐसे कार्य है जिनमें पशु ऊर्जा का सही ढंग से प्रयोग लाभदायक सिद्ध हो सकता है उदाहरणार्थ

रहट के माध्यम से कुंए से पानी खींचना आदि।

एक ऐसा अन्य क्षेत्र है जहाँ पशु धन पर आधारित ऊर्जा तन्त्र का प्रभावशाली उपयोग किया जा सकता है। गोबर गैस, जो कि गोबर में किण्वन की प्रक्रिया से प्राप्त होती है, घरों में खाना पकाने के लिये ईंधन रूप में प्रयोग की जा सकती है। अहमदनगर जिले के रालेगांव शिडि नामक गांव में तो यह चमत्कार करके एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। यहाँ एक सकेन्द्रित बायोगैस संयत्र की सहायता से २०० परिवारों को खाना पकाने के लिये गैस ईंधन प्राप्त होता है। हर्ष की बात तो यह है कि बायोगैस संयत्र से विसर्जित गोबर स्लरी भी व्यर्थ नहीं जाती। इसका प्रयोग व्यापक रुप से सेन्द्रीय खाद के रुप में कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिये किया जा सकता है। इस प्रकार से हम पाते हैं कि गाय भैंस के गोबर से न केवल इंधन व खाद प्राप्त किये जा सकते हैं अपितु पर्यावरण को भी स्वच्छ रखा जा सकता है।

एक अनुमान के अनुसार एक गाय या भैंस प्रतिवर्ष औसतन ३५०० किलोग्राम गोबर प्रदान करती है जिसे कि ४५०० घनफुट बायोगैस के रुप में परिवर्तित किया जा सकता है। केवल २ या ३ पशुओं से ही एक लघुस्तरीय बायोगैस संयंत्र प्रारम्भ किया जा सकता है। वे पशु जिन्होंने दूध देना बंद कर दिया हो और जिन्हें उनके स्वामी बोझ समझते हैं उन्हें निम्न दरों पर खरीद कर बेरोजगार व्यक्ति अपना स्वयं का संयंत्र स्थापित कर जीविकोपार्जन कर सकते हैं। बड़े—बड़े फ़ार्मों मे जैसे कि चाय या काफ़ी बागानों मे बायोगैस प्लान्ट लगाने से पौधों मे लगनीवाली बीमारियों से भी छुटकारा पाया जा सकता है।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि यदि हम परिवहन व कृषि कार्यों हेतु पशु उर्जा का भरपूर उपयोग करें तो हम पैट्रोलियम के आयात से मुक्ति पा सकते हैं। इससे राष्ट्र आर्थिक रूप से भी आत्मनिर्भर होगा क्योंकि फिर हमें बहुमूल्य विदेशी मुद्रा को ऊर्जा के आयात पर नहीं व्यय करना पड़ेगा।

परन्तु इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमें आवश्यकता है अधिक पशुओं की जो अधिक खेत जोत सकें, अधिक सामान ढ़ो सके और अधिक गोबर व मूत्र प्रदान कर सकें जिसे हम सेंद्रिय खाद व सेंद्रिय कीटकनाशक के रूप में प्रयोग कर सकें। पर दुर्भाग्यवश आज हमारा देश पशु संपदा में विश्व के गरीब देशों में गिना जाता है। जिसका मुख्य कारण देश के हजारों कत्लखानों में लाखों की संख्या में पशुओं का कटना है।

अतः यदि हम इस ऊर्जा संकट से, जो मुँह बाए हमारे समक्ष खड़ा है, छुटकारा पाना चाहते हैं, तो पहला कदम पशुओं को भातृवत प्रेम देकर सम्मानपूर्वक जीने का अधिकार देना होगा।

आतंकवाद और महावीर

– श्री अमृत ऋषि 'साहित्यरत्न'

विश्व एक उलझन युक्त समस्या से ग्रस्त है। वह है, आतंकवाद। आतंक शब्द का अर्थ है डराना धमकाना और वक्त आए तो हत्या करने में किसी प्रकार की हिचक तक प्रकट नहीं करना। आतंकवाद की समस्या गंभीरतम पेचीदा समस्या है। एक उलझनयुक्त गुत्थी को सुलझाने की कोशिश करते हैं तो दूसरी गुत्थी स्वतः निर्मित हो जाती है। राष्ट्र उन गुत्थियों को सुलझाने में अपनी समस्त शक्ति झोक देता है। उसकी आर्थिक प्रगति मील के पत्थर सी जाम हो जाती है। वह विपन्नता की ओर अग्रसर हो जाता है। संपन्नता से कोसों दूर चला जाता हैं। गरीबी की मानक रेखा से उसका स्तर नीचे गिर जाता है।

आतंकवाद का मुख्य लक्ष्य है - सत्ता प्राप्ति। सत्ता में अपनी उपस्थिति बरकरार रखने या स्थापित करने में येन-केन-प्रकारेण सभी प्रयत्न करता है। आतंक राजनीति की गंदी उपज है। उसे रक्तपात से भी परहेज नहीं है। वह जातिवाद और वर्गसंघर्ष को बढ़ावा देता है।

आतंकवाद का पर्यायवाची नाम है - उग्रवाद। उग्र व्यक्ति सागर में उठे चक्रवात के समान है। चक्रवात जैसे लाखो व्यक्तियों को मौत के मुंह में पहुँचाने में हिचक महसूस नहीं करता वैसे ही उग्रवाद सभ्यता एवं संस्कृति के चोले को उतार कर लाखों को बेघरबार करते हुए मौत के मुंह में पहुंचा देता है। उग्रवादी व्यक्ति राष्ट्रीय विचार धारा से अपने आप को दरकिनार कर लेता है। उसकी मासूमियत पर हमेशा के लिए प्रश्नचिन्ह लग जाता है। बची-खुची जिंदगी अलग-अलग छुपते-छुपाते हुए व्यतीत करना पड़ता है। पुलिस का डर मौत की तलवार उसके समक्ष हमेशा लटकी हुई दिखाई देती है। निडर होकर बाजार में गुजरने लायक नहीं होता।

आतंकवाद की महावीर ने जोरदार भर्तसना की है। उन्होंने आतंक को विजय श्री प्राप्त करने के लिए अनिवार्य अंग नहीं माना। आतंक पैदा नहीं हो ऐसा व्यक्तियों को कार्य करना चाहिए। यदि हम परस्पर विभाजित करनेवाले कार्य सम्पादित करते रहेंगे तो आतंकवाद स्वतः उभरेगा ही। उभरने के बाद सारा दोष फिर आतंकियों पर मढ़ना कहां तक उचित हैं? आतंक दैनिक आवश्यक वस्तुओं के प्राप्त न होने पर निर्मित होता है। हमारा जो आर्थिक ढॉंचा है वह परिपूर्ण नहीं है। जब तक हम उसमें आमूल-चूल परिवर्तन नहीं करेंगे तब तक यही स्थिति बनी रहेगी। महावीर ने आर्थिक विश्लेषण करते हुए - जो तुम्हें एक वस्तु प्राप्त हुई है, उसे साथियों में या समाज में बराबर बॉंट दो। जो बॅंटवारा ही नहीं करता है महावीर उसे असंविभागी कहते हैं। जो संविभाग करता नहीं है और अकेले ही हजम करने की नीति अपनाता है तो उसे मोक्ष प्राप्त होना मुश्किल है।[1] वस्तु का एकाधिपत्य ही आतंक को उत्पन्न करने में सहायक हैं।

आतंक अबोधता की उपज है। जब व्यक्ति को जोश एवं तनाव उत्पन्न हो जाता है, तब उसकी निर्णायक क्षमता का ह्रास हो जाता है। उसका स्वविवेक लुप्त हो जाता है।

बुद्धि काम करना बंद कर देती है। उसका एक ही लक्ष्य स्थापित हो जाता है कि अभावों की पूर्ति करना। राष्ट्रीय व्यवस्था पर से उसे अविश्वास हो जाता है। इसी नासमझी एवं भोलेपन पर अपनी जिंदगी शतरंज के उलझनभरे दाव पर लगा देता है।

महावीर ने सदैव बहुपक्षीय बात कही है। एक पक्षीय बात को नकार दिया है। उन्होंने आतंक का जोरदार रूप से निषेध किया था। अपनी क्षुद्र स्वार्थपरता के कारण निरापराध व्यक्तियों की हत्या करना कहाँ तक जायज है? नाजायज रूप से की गई हत्या क्या मानवता के पतन का नग्न नृत्य नहीं है? मानव को जैसे अपना अस्तित्व प्रिय है, अपना सुख अभीष्ट है, वैसे ही अन्य प्राणियों को भी अपना अस्तित्व प्रिय है एवं अभीष्ट है। यह सह अस्तित्वरूप परिबोध ही अहिंसा का मूलस्वर है। वैर हो, घृणा हो, दमन हो, उत्पीड़न हो-कुछ भी हो, अंततः सब लौट कर कर्ता के ही पास आते हैं। यह मत समझो कि बुराई वहीं रह जाएगी, तुम्हारे पास लौटकर नहीं आएगी। वह आएगी, अवश्य आएगी, कृतकर्म निष्फल नहीं जाता। चैतन्य चैतन्य एक है। जिसे तू पीड़ा देना चाहता है वह और कोई तू ही तो है। जिसे तू मारना चाहता है, वह तू ही है।[२] अपने वजूद को अपने से जुदा करना आत्मघात की प्रक्रिया है। यह बुद्धिमता का परिचय नहीं बल्कि मूर्खता का है। महावीर का अहिंसावाद आतंकवाद का कट्टर विरोधी है।

महावीर निर्भयता के प्रतीक थे। जहाँ भय अवस्थित हो वहाँ साधक अपनी साधना नहीं कर पाता। आतंक जुल्म तो करता है किंतु अपने से शक्तिशाली मानवों से डरता है। उसकी निर्भयता क्षणिक होती है। स्थायित्व की तो बात ही नही। डरा-धमका कर बलात् अपनी कार्यसिद्धि करना कायराना प्रवृत्ति है। जो कुछ तुम्हें प्राप्त करना है उसे स्वयं के पुरूषार्थ द्वारा ही प्राप्त करो। अपुरूषार्थ आलस्यता की निशानी है। पुरूषार्थ जीवन की अमूल्य निधि है। इस हस्तगत निधि का उपयोग नहीं करेंगे तो प्रमाद का आना स्वभाविक है। आतंकवाद आलस्यता और अकर्मण्यता की बढ़ोतरी करने वाला है। जीवन से हताश निरूद्यमी व्यक्ति ही आतंक को स्वीकार करता है। परिश्रम करते जाओ तुम्हें सिद्धि एक दिन अवश्य ही प्राप्त होगी। महावीर कहते हैं - जरा सी झंझटों से और बाधाओं से घबरा गए तो तुम्हारा विकास होना संभव नहीं है। समय मात्र का प्रमाद मत करो।[३] एक क्षण ही आलस्यता में गंवा दिया तो वह क्षण पुनः आने का नहीं है। समय को गंभीरता से समझो और उसका सही मूल्यांकन करोगे तो तुम्हें समय की कीमत का अंदाजा होगा।

महावीर द्वारा उपदेशित तथ्य को भली-भांति समझने का प्रयास करेंगे तो आतंक जैसी न सुलझने वाली समस्या भी सुलझ सकती है। आपस में प्रेम माधुर्यता और सौजन्यता की भावना प्रवाहित होगी तो जीवन स्वर्ग सा चमक सकता है। हमें राष्ट्रीय विचारधारा से जो युवा वर्ग दूर हो गया है उसे प्रयत्न करके पुनः जोड़ना चाहिए। उनके दुःख क्या है, सुनाने का अवसर देना चाहिए। महावीर का विश्व बन्धुत्व का भाव वापस उनको राष्ट्रीय एकात्मकता में जोड़ने में सक्षम है।

---

१) असंविभागी न हु तस्स मुक्खो - (दशवैकालिक अ.८ गाथा)
२) तुमंसि नाम तं चेव नं हंतव्वं ति मन्नसि (आचारांग १/५/५)
३) समयं गोयम मा पमायए। - (उत्तराध्ययन सूत्र अ.१०)

क्या आप जानते हैं कि...

- आहार की शुद्धि-अशुद्धि पर सम्यक् विचार जितना जैन शास्त्रों में हुआ है उतना शायद ही किसी अन्य जगह हुआ हो।
- सन् १९७२ के बाद ब्रिटेन में वयस्क धूम्रपान कर्ताओं की जनसंख्या प्रतिवर्ष ३,००,००० यानी रोज ८२० कम हो रही है।
- लंदन में भूमिगत रेल-प्रणाली के अन्तर्गत रेलों तथा स्टेशनों पर धूर्मपान पूर्णतः वर्जित कर दिया है।
- इतिहास के पृष्ठों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि अनेक मुगल बादशाहों, मजहब के पैगम्बरों ने भी गोवध तथा पशु पक्षियों के वध पर निषेध कर दिया था।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन की ताजा रिपोर्ट के अनुसार विश्व में धूम्रपान और तम्बाकू-सेवन से संबद्ध बीमारियों के कारण प्रतिवर्ष २५ लाख से अधिक लोगों की मौत होती है। यह संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है।
- भारत में धूर्मपान से मरने वालों की संख्या ८ लाख से अधिक है।
- आज दुनियाँ में इतने शस्त्रास्त्रों का भंडार है कि उनके उपयोग से किसी एक प्रदेश या राष्ट्र को नहीं, सम्पूर्ण पृथ्वी के प्राणियों को कम से कम सौ बार नष्ट किया जा सकता है, फिर भी शस्त्रास्त्र निर्माण की प्रक्रिया चालू है।
- एक सर्वेक्षण के अनुसार एक अरब रुपये प्रतिदिन शस्त्रास्त्र भंडार वृद्धि के लिए खर्च किये जा रहे हैं। यदि यह सारी राशि किसी अस्पताल, शिक्षा, परोपकार आदि विधायक कार्य में खर्च की जाय तो मनुष्य समाज अधिक सुखी हो सकता है; परन्तु स्वार्थी राष्ट्रों के नायकों को समझायें कौन ?
- आयुर्वेद में अधिकांश व्यक्तियों का मूल कारण आहार की विषमता को माना गया है। देश, काल, ऋतु के अनुरूप साम्य, सुपाच्य, पोषक एवं बलकारक आहार का सेवन स्थिर स्वास्थ्य का मूल आधार है।
- रोगोत्पत्ति में अनुचित आहार भी एक मुख्य कारण है। इस दुनिया में बहुत कम लोग भूख या बीमारी से मरते हैं; अधिकांश लोगों की मृत्यु आहार की विधि, स्थिति, प्रमाण और परिणाम की जानकारी के अभाव में होती है। ऐसे व्यक्तियों के लिए आहार जीवन का आधार होते हुए भी अभिशाप सिद्ध होता है।
- ऐसी स्थिती में जब कि विदेशी कर्जो पर हमारी निर्भरता बढ़ गयी है कई कारणों से विदेशों में हमारी साख गिर गई है।

\- **धर्ममित्र**

अश्लील-साहित्य मत पढ़ो

जीवन के वन में भटक न जाय
इसके लिए
मार्गदर्शक अनिवार्य है।
सद्गुरु हमें जीवन की सही राह
बतलाते हैं।
सद्गरु के वचन अर्थात्
सत्साहित्य का आश्रय लेना।
तुझे जीवन की सही दिशा मिल जाएगी।
सत्साहित्य जीवन बनाते हैं,
गंदा साहित्य/अश्लील साहित्य
जीवन बिगाड़ते हैं।
विष वृक्ष से भी
अश्लील साहित्य अधिक खतरनाक है।
विष वृक्ष की छाया तो ठंडी होती है,
अश्लील साहित्य की तो छाया भी खराब है,
उससे सदैव दूर रहना।

शिक्षा का फल

शिक्षण का वास्तविक उद्देश्य तो
जीवन में मानवीय एवं दैविक गुणों की
प्रतिष्ठा करना है।
जिस शिक्षण के बाद व्यक्ति
धन में लोभांध बनता हो,
वासनाओं से उत्तेजित बनता हो,
गरीबों का शोषण करता हो
कमज़ोरों को सताता हो
अनपढ़ों को ठगता हो तो
वास्तव में उस शिक्षण को धिक्कार है।
शिक्षण से
बुद्धि की वृद्धि ही पर्याप्त नहीं है,
बुद्धि की शुद्धि भी होनी चाहिये।
अन्यथा
वही बुद्धि स्वयं के जीवन को,
समाज व राष्ट्र को
विनाश के कगार पर लाकर
खड़ी कर सकती है।

महावीर-वाणी

- जो भोगी (भोगासक्त) है, वह कर्मों से लिप्त होता है। और जो अभोगी है, भोगासक्त नहीं है, वह कर्मों से लिप्त नहीं होता। भोगासक्त संसार में परिभ्रमण करता है। भोगो में अनासक्त ही संसार से मुक्त होता है।
- स्वाध्याय करते रहने से समस्त दुःखों से मुक्ति मिलती है।

– मधुकर

सरेराह चलते-चलते ...

❋ **सरकार ने व्याज चुकाया जनता का पेट काटकर** – पिछले वर्ष सरकार ने ५ लाख ६० हजार टन चीनी दो हजार रुपये प्रति टन (दो रुपये किलो), १० लाख टन गेहूँ २३७ रुपये प्रति क्विंटल (९५ डॉलर प्रति टन), सात लाख टन चावल (गैर बासमती) २५५ रुपये प्रति क्विंटल निर्यात किया और विदेशी मुद्रा प्राप्त कर व्याज चुकाया। उस समय भारतीय बजार में नौ रुपये किलो चीनी, पांच रुपये किलो गेहूँ और छह रुपये किलो चावल का भाव था। इस वर्ष दस लाख टन चीनी उसी भाव पर निर्यात कर विदेशी मुद्रा अर्जीत की, अब आप ही फैसला करें कि राव सरकार ने जनता का पेट काटा या नहीं?

❋ **मुद्रा परिवर्तनीय और अतिरिक्त बोझ** – डंकल प्रस्ताव और विदेशी कंपनियों के दबाव से सरकार ने भारतीय मुद्रा को पूर्ण परिवर्तनीय बना दिया। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि डॉलर का मूल्य बढ़ गया है। परिवर्तन के पूर्व डालर का मूल्य २४ रुपये था जो अब ३३ रुपये हो गया है एवं भविष्य में ३५ रुपये हो जाने का आशा है। इसके कारंण विदेशी कर्ज और ब्याज की वार्षिक किस्त चुकाने में ५० अरब का अतिरिक्त बोझ पड़ेगा।

❋ **गोवंश हत्या पर प्रतिबंध और सरकार** – एक तरफ मार्गदर्शक सिद्धान्तों में गो-वंश हत्या पर प्रतिबंध को शामिल किया जाता है, दूसरी ओर नैतिकता के सारे सिद्धान्तों को एक ओर रखकर सरकार द्वारा 'बीफ बर्गर' (गो मांस से बनने वाला फास्ट फूड) बनाने के लिये गोवंश की बड़ी संख्या में हत्या करने के लिये मेक्डोनाल्ड नामक विदेशी कम्पनी को मंजूरी दी जाती है। यह कैसी विडम्बना है?

❋ **डंकल प्रस्ताव : एक घना मीठा जहर** – डंकल प्रस्ताव ४४६ पेज का दस्तावेज है जिसे डंकेल ड्राफ्ट टेक्स्ट (डी डी टी) कहते हैं। यह डी डी टी दवा से भी घना मीठा जहर है जो धीरे-धीरे असर करेगा। मुद्राकोष और विश्व बैंक की अनेक शर्तें डंकल प्रस्ताव की शर्तों के समान हैं। मसलन कृषि पर दी जाने वाली सबसीडी पूरी तरह समाप्त करना, सार्वजनिक वितरण प्रणाली को समाप्त करना, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों पर से नियंत्रण समाप्त करना ताकि विदेशी माल की खपत पूरी तरह हो सके और उनके भारत की संपत्ति को लूटने का मार्ग खुल जाए, विदेशी कम्पनियों का मार्ग आयात-निर्यात के लिये कर मुक्त हो ताकि उनका माल सस्ता हो और स्वदेशी लघु उद्योग बंद हो जाए।

– **प्रवासी**

ज्ञानसूर्य — श्रीमद् यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ — जीवन प्रभात

धार्मिक ज्ञान का सूर्य हम सभी के परिवारों में
जीवन प्रभात का उदय करे इस हेतू
अ. भा. श्री राजेंद्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा
पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज़ की
प्रेरणा से संस्थापित –

श्रीमद् यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ

के धर्म – शिक्षा प्रचार अभियान में सहयोग दीजिए।

समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रसार, समाज सुधार तथा आर्थिक विकास के दिव्य उद्देश्यों पर स्व. गुरुदेव श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज द्वारा स्थापित

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद
को सुदृढ बनाइये।

परिषद के सदस्य बनिए, अपने यहां परिषद शाखा का गठन कीजिए।
धार्मिक पाठशाला स्थापित कीजिए।

सुरेन्द्र लोढ़ा
महामंत्री

सेवन्तीभाई एम. गोरखिया
अध्यक्ष

अ. भा श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

सम्पर्क – सूत्र :– सुरेन्द्र लोढ़ा, राष्ट्रीय महामंत्री,
अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद –
मन्दसौर ४५८ ००२ (म. प्र.)

रूकिये ! पढिये !! सोचिये !!!

- फूड प्रोसेसिंग की विदेशी कंपनी की तुरता भोजन (फास्ट फुड) की ३५ वस्तुओं पर सीमा शुल्क २५५ से घटाकर १३५ प्रतिशत कर सरकार ने विश्व बैंक के महानिदेशक के आदेशों का पालन सिर झुकाकर किया, क्या यह देश को दिवालिया बनाने की ओर कदम नहीं है ?

- मांस उत्पादन को बढ़ाने के लिये प्रणियों को अधिक अनाज खिलाने का नया सिलसिला शुरु हुआ है। विश्व में कुल अनाज उत्पादन का ३८ प्रतिशत पशुओं को खिलाने में जाता है, ताकि ज्यादा मांस प्राप्त हो।

- मेकडोनाल्ड एवं अन्य विदेशी कम्पनियों को हरी झंडी देकर सरकार ने पशु धन नाश करने का घिनौना कार्य किया है। ये कम्पनियां फास्टफूड बनाने में लाखों पशुओं की कत्ल करती है।

- पहले पशुपालन खेती में काम लेने एवं दूध उत्पादन के लिये किया जाता था, अब मांस उत्पादन के लिये पशुपालन किया जाने लगा है। इस बदले अभिगम का पर्यावरण पर भी बुरा असर पड़ा है।

- अनाज के बदले मांसाहार पर ज्यादा अवलंबन रहने पर देश की क्या स्थिती होती है उसके लिये रुस का उदाहरण देखिये। सन् १९५० से आज तक वहॉं मांस की खपत तीन गुना बढ़ने से पशुओं को खिलाये जाने वाले अन्न में चार गुना वृद्धि हुयी। आज मानव की अपेक्षा पशुओं को तीन गुना अनाज खिलाया जाता है, फलस्वरुप जहॉं अनाज की आयात जो १९७० तक बिल्कुल नहीं की जाती थी वहॉं १९९० में २ करोड ४० लाख टन पर पहुंच गयी।

- वर्ल्ड वॉच इन्स्टीट्यूट द्वारा विश्व की स्थिती १९९२ नामक एक रिपोर्ट के अनुसार यह चेतावनी दे गयी है कि विश्व को मांसाहार पर अवलंबन रखना संभव नहीं है।

- जिन तत्वों से हम अपनी सन्तानों को दूर रखना चाहते थे वह क्रूरता, हत्या, नग्नता, अशिष्टता अब अपने घर के दिवानखाने में टी. वी. के द्वारा बेरोकटोक आ गयी है।

- राजनीति में नैतिक मूल्यों का न्हास जिस गति से हो रहा है वह भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक देश की राजनीति के लिये प्राणघातक है।

- इस जमीन पर कोई भी जीवधारी ऐसा नहीं है, जो निरर्थक हो या जिसकी कोई उपयोगिता न हो। शाकाहार आत्मानुशासन का ही दूसरा नाम है, वह मात्र आहार नहीं, इंद्रिय संयम भी है। इसके द्वारा पूरे मन पर काबु पाते हैं, अपनी कामनाओं और वासनाओं का नियमन करते हैं।

– मुसाफिर

अहिंसा और शाकाहार

स्व. श्री.लक्ष्मीचंद सरोज

अहिंसा जीवन संजीवनी

अहिंसा का अर्थ सामान्यतया न हिंसा अहिंसा अर्थात् निषेध परक ही समझा जाता है पर अहिंसा का यह अर्थ अपूर्ण है । अहिंसा का विधि परक अर्थ यह भी है कि जहां किसी को भी नहीं मारने का मनोभाव है वहाँ प्रयोग के लिए मनोभाव भी जुड़ा है कि जीव मात्र पर करूणा हो सभी प्राणियों के जीवन की सुरक्षा हो । अहिंसा, जीवन संजीवनी बनी रहे, इसके लिए यत्न अवश्य ही हो ।

आचार्य उमास्वामी के शब्दों में "प्रमाद पूर्वक किसी भी प्राणी के प्राणों का हरण करना हिंसा है ।" सोदाश्रयी के जनक कबीरदास के शब्दों मे "कीड़ी और कुंजर-दोनों ही जब सांई के जीव हैं तब हमें उनकी हत्या नहीं करके सुरक्षा करनी चाहिए ।" राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी के शब्दों में हिंसा मृत्यु का विघातक नियम है और अहिंसा जीवन का विधायक नियम है । हिंसा, आसुरी संपत्ति है और अहिंसा "दैवी संपत्ति है"

वर्तमान विश्व अपने क्षितिज पर प्रथम-द्वितीय विश्व-युद्धों की विभीषिका और विध्वंस-लीला देख लेख चुका है, अतएव युद्ध से अयुद्ध की दिशा में बढने के लिए, निरस्त्रीकरण-गुट निरपेक्ष आंदोलन की ध्वनि सुनाई पड रही । जितेन्द्रिय बनने सही अर्थों में जैन बनने, विश्व-एक परिवार बनाने, अहिंसक समाज-संरचना के संदर्भ में सीखा जावे कि अहिंसा आचार्य अमित गति के शब्दों में 'सत्वेषु मैत्री' (सभी प्राणी सुहृद) का संदेश दे रही और 'गणिषु-प्रमोंद' गुणवानों के गुणों में अनुरक्ति-अनुराग प्रगट करने की बात कही तथा 'क्लिष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वं, दीन-दुखी जीवों पर करूणा की धारा बरसाने का कह रही एवं 'माध्यस्थ भावं विपरीत वृत्तौ' विरोधियो से मध्यस्थता या तटस्थता की मानसिकता बनाए रखने का कह रही । एक वाक्य में अहिंसा मित्रता, प्रमोद, करूणा, एवं मध्यस्थता की स्त्रोत है । अहिंसा जीवन के हर क्षेत्र में सर्वत्र-समानता, संवेदन-शीलता, एकता, भावुकता और भावनात्मकता-रचनात्मकता को प्रोत्साहन दे रही है । अहिंसा-बलवान के लिए सुरक्षा का मंत्र सिखा रही है, निर्बल के लिए जीवन-संघर्ष में जूझने की चेतना का शंख फूक रही है ।'

अहिंसा का प्राण शाकाहार

क्या खावें और क्या न खावें ? किसे भक्ष्य कहें और किसे अभक्ष्य ? प्रश्न को जितना जैन आचार्यो ने उत्तरित किया उतना अन्य धर्म आचार्यों ने नहीं किया ? 'क्रिया-कोष' नामक ग्रंथ में इन प्रश्नों का उत्तर बडी सुक्ष्मता से दिया गया । अहिंसा, जीवनदायिनी भावना है तो शाकाहार उसका प्राण है । मांसाहार की तो चर्चा भी हिंसा ही है । सात्विक शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करने की बात साधक (गृहस्थ और साधु) के लिए कही गई । पर्व-प्रीति भोज परिस्थिति विशेष में राजस

भोजन भी स्वीकारने की बात कही गई, मिष्ठान-पकवान से परहेज नहीं किया गया पर तामस भोजन, जिसमें मांस प्रमुख या बहुल है, उसे अस्वीकार ही करने का आदेश दिया गया है। कारण "जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन, जैसा पिये पानी वैसी बोले बानी"। लोकोक्ति को भी दृष्टि-पथ में रखा गया। पानी छानकर पीने, प्रतिदिन देव-दर्शन, पूजन करने, दिन में ही भोजन करने का विधान जो जैनाचार ग्रंथों में है, उसकी पृष्ठभूमि में अहिंसा मुखरित है। अहिंसा के परिप्रेक्ष्य में ही मार्कण्डेयं महर्षि ने निम्नलिखित श्लोक लिखा है।

अस्तं गते दिवानाथे, तोयं रुधिर मुच्यते।
अन्नं मांस समं प्रोक्त - मार्कण्डेय महर्षिणा॥

चूंकि शाकाहार पौष्टिक आहार है और विश्व का व्यक्ति अपने अध्ययन अनुभव-अभ्यास अध्यवसाय के बल पर इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि शाकाहार भोजन का सर्वोत्तम तरीका है। शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक-नैतिक-राष्ट्रीय-अन्तराष्ट्रीय सभी दृष्टियों से शाकाहारी भोजन मानव के लिए सर्वोत्तम है, अतएव शाकाहारी भोजन स्वयं करना चाहिए और अन्य जनों को भी ऐसी ही प्रेरणा देनी चाहिए।

लीओ नारडो डी विन्सी - पश्चिमी सभ्यता के सर्वप्रथम शाकाहारी थे, वे स्वभावतः इतने दयालु थे कि पिंजरे में बंद पक्षी को भी मूल्य देकर लेते थे और दरवाजा खोलकर पक्षी को आकाश में विचरण करने के लिए छोड़ देते थे। शाकाहारी भोजन करनेवालों के मानस में करूणा की मंदाकिनी बहती है। विश्व के बडे-बडे विचारक, महात्मा, साहित्यकार, नरेश कार्यकर्ता शाकाहारी ही हुए।

जब शाकाहारी भोजन में आवश्यक मात्रा में प्रोटिन विटामिन, खनिज, उष्णता है, शाकाहार में प्रभावकारी शक्ति और व्यवहारिक सहिष्णुता तथा केलशियम एवं कार्बोहाइड्रेट्स है, शाकाहारी भोजन समुचित संतुलित सस्ता है तब पता नहीं कि भारत संघ के सम्मुख क्या मजबूरी है जो प्रतिदिन वधशालाएँ खोलकर मांसाहार को प्रोत्साहन दे रहा है; जिन अंडो को बंदर तक नहीं खाते हैं, उन्हीं अंडो को शाकाहारी बतलाकर जनता को खाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। चूकिं मानव-शरीर की रचना शाकाहारी पशुओं जैसी है, अतएवं शाकाहार ही मानवों के लिये उपयुक्त है। जब मांसाहारी लोग ही शाकाहारी पशुओं का मांस खाते हैं तब हमें प्राण-प्रण से शाकाहारी भोजन ही करना चाहिए। मांसाहारी भोजन तो कदापि भूले-भटके भी न करें।

हिंसा का जनक मांसाहार

डॉ. आनंद निमल सूरिया ने लिखा - 'मांस, पशु-पक्षियों को मार कर, तड़पा कर मारने पर मिलता है। भयभीत पशु-पक्षी की भावनाएँ उनके मांस में भी रासायनिक परिवर्तन करती हैं। मांस को उबालने पर भी उसमें भयंकर रोग-उत्पादक कीटाणु रहते हैं'। मीरदाद का अभिमत है - 'जो रुह नियत के रास्ते पर चल रहे है' वे यह नहीं भूलें कि वे मांसाहार करेंगे तो परिणाम स्वरूप खुद का मांस भी दंड स्वरूप उन्हें देना पड़ेगा। शिष्ट भाषा में विचारें कि मैं जिसका मांस खा

रहा, हूं वह भी कभी मेरा मांस खायेगा। आखेट युग की मांसाहारी प्रवृत्ति को सुविकसित स्थिति में भी स्वीकारना प्रकारान्तर से अपनी बुद्धिमत्ता का दिवालियापन ही घोषित करना है।

किंग्स फोर्ड और हेनरी ने लिखा - मांसाहार को छोड़ कर उसके बदले में दूध पनीर मसूर की दाल का प्रयोग करना चाहिए जो मांस के समान ही मांस में वृद्धि करते हैं व मूल्य में भी सस्ते हैं। जब बहुत से पशु-पक्षी ही मांस नहीं खाते हैं तब फिर हम मांसाहारी बनकर पशु-पक्षीयों से गए बीते हो जावेंगे फिर हम अपने आपको सर्वश्रेष्ठयोनि मानव या मनु-पुत्र किस प्रकार कह सकेंगे ? महाभारत के अनुशासन पर्व अध्याय ११६ में महर्षि वेदव्यास ने लिखा- 'मांसाहारी तो राक्षस ही है जो लोग तरह-तरह के अमृत से भरे शाकाहारी उत्तम पदार्थो को छोड़कर मांस जैसे घृणित पदार्थ खाते हैं, वे सचमुच ही राक्षस की तरह दिखाई देते हैं'' । 'जो दूसरों के मांस से अपना मांस बढाना चाहता है, उस निर्दयी से बढ़कर विश्व में कोई क्षुद्र व्यक्ति नहीं है।'

महात्मा गौतमबुद्ध से मांसाहार पर टिप्पणी देने का कहें वे परामर्श देंगे कि 'मांस तो दुर्गन्धमय है, आर्यजनों द्वारा त्याज्य है। आर्य पुरुष मांस और खून का आहार कदापि नहीं करते क्योंकि मांस अभक्ष्य है और घृणित तथा ग्लानि का जनक है'' । स्वामी दयानंद सरस्वती तो आचार विचार की दृष्टि से सभी को सावधान करना चाह रहे - शराबी और मांसाहारी के हाथ का खाने में भी शराब और मांस खाने-पीने जैसा दोष लगता है। जो लोग मांस खाते हैं, शराब पीते हैं उनके शरीर और धातुएँ दुर्गन्धित और दुषित हो जाती हैं। इसलिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने सूर्य सत्य लिखा - चाहे कुछ भी हो पर धर्म हमें अंडे-मांस-मछली खाने की अणुभर भी आज्ञा नहीं देता है, इसलिए 'चाहे जो हो, मैं मर जाना पसंद करूंगा परंतु मांस कदापि नहीं खाऊंगा। पशुओं का मांस खाना तो घोर नैतिक पतन है' । सिक्खों के सर्वप्रथम धर्म-गुरू नानकदेव ने लिखा - 'कपडे पर खून लगने से कपड़ा गंदा हो जाता है। वही घृणित खून जब मनुष्य पियेगा तब उसकी चित्तवृत्तियाँ अवश्य ही दूषित हो जावेंगी' ।

जैसे बिना मरे स्वर्ग नहीं मिलता है वैसे ही बिना किसी जीवों को मारे मांस प्राप्त नहीं होता है। इसलिए शोक-शिकार-धर्म के नाम पर भी किसी को मारना उचित नहीं है। अन्न की पूर्ति के लिए पश्चिमी देशों में मांसाहार स्वीकार किया गया था पर भारत संघ जैसे कृषि-प्रधान देश में जहां पृथ्वी का ६/७ भाग उपजाऊ है वहां मांसाहार की बात करना भी अनुचित है। आर्य समाज के जनक दयानंद सरस्वती ने कभी दूरदर्शी बन लिखा था – 'हे मांसाहारियों ! जब कुछ काल पश्चात् पशु नहीं मिलेंगे तब तुम मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे या नहीं ? प्रस्तुत प्रश्न के उत्तर में 'नहीं' की संभावना इसलिए अधिक है कि मांसाहारी प्राण छोड़ छुड़ा सकते हैं परंतु मांस खाने का चस्का नहीं। चूकिं मांस की उत्पत्ति ही दो, तीन, चार, पांच इन्द्रियवाले प्राणियों के नाश से होती है अतएव जैन धर्मविदो ने तो इस अप्राकृतिक पदार्थ मांस को खाना तो दूर रहा देखना भी नहीं चाहा।

जब हम इस सत्य और तथ्य से सपरिचित हैं कि संसार के जितने भी प्राणी हैं उन सभी को प्राण प्रिय हैं और वे सभी जीना चाहते हैं मरना नहीं। ऐसी स्थिती में विचारना यह है कि जब हम किसी को जीवनदान नहीं दे सकते हैं तब फिर किसी के जीवन को छीनने का भी हमें क्या अधिकार है ? कुछ भी नहीं, अणु भर भी नहीं।

आज की आवाज—शाकाहार

सुप्रसिद्ध लेखक घुमक्कड़ लल्लन प्रसाद ने 'धर्मयुग' में एक निबंध लिखा था कि 'साग सब्जी खाइये, रोग दूर भगाइये ।' यूरोप-अमेरिका में भौगोलिक विवश्ताओं के कारण जन्मजात मांसाहारी होने पर भी लोगों ने मांसाहार की हानियां ज्ञातकर शाकाहार को स्वीकार कर लिया । 'मांसाहार स्वास्थ्य के लिए अहितकर है और शाकाहार सुहितकर है ।' यह बात स्वीकारी है और भारत में शाकाहारी परिवारों में मांसाहार बढ़ा यह विधि की विडम्बना नहीं तो और क्या है ?

शाकाहारी पथ्य ७० से ७५% हृदय-रोग रोकता है । शाकाहारी शारीरिक रोगो पर सहजता से विजय प्राप्त कर लेता है । शाकाहार के पक्षधर शाकाहारी होटल । जल-पान गृह । उपहार गृह खोल रहे, संकल्प के धनी बन मांसाहार छोड़कर शाकाहारी बन जीवन जी रहे । शाकाहार के समर्थन में यूरोप में आंदोलन चल रहा । पश्चिमी देश शाकाहारी बनकर अपने आपको आध्यात्मिक दर्शन से भी जोड़ रहे हैं । शाकाहारी आंदोलन एक नवीन मोड़ लिए मांसाहारी रेस्तरां के विरूद्ध सत्याग्रह कर रहा है । शाकाहार आंदोलन का उद्देश्य मांसाहार की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करना है । इस आंदोलन को 'वेजीटेरीयन वायस' पत्र के साथ हरे कृष्ण आंदोलन के प्रकाशन, साईंबाबा केन्द्र स्थल भी गति-मति दे रहे हैं । शाकाहार की सक्रियता के समर्थन में पूर्वी देशो को बहुत पीछे छोड़ दिया है ।

तुलना के सत्य/तथ्य

१. शाकाहारी से मांसाहारी को तेरह गुनी जमीन चाहिए ।

२. अफलप्रद अंडे शाकाहार नहीं प्रत्युत फलप्रद अंडो जैसे मांसाहार ही हैं ।

३. शाकाहार-वनस्पति जन्य आहार कैंसर नियंत्रयिता है और मांसाहार जीव-मरण जनित आहार कैंसर निमंत्रियता है ।

४. फल, मेवा, सब्जियों में नाम मात्र को भी कोलेस्ट्रोल (विष) नहीं है पर एक अंडे में चार ग्रेन कोलेस्ट्रोल (विष) है ।

५. फल, मेवा सब्जी, अनाज-दाल-तिलहन बिमारी नाशक है पर अण्डे, मांस उनसे बने पदार्थ खाते ही बिमारी के विकासक हैं ।

६. मांस में यूरिक और यूरिक एसिड दोनों विष होते हैं पर शाकाहार में ये दोनों विष नाम मात्र को भी नहीं हैं ।

७. मांसाहार में केलशियम बहुत कम है । कार्बोहाइड्रेट्स बिल्कुल नहीं है परन्तु शाकाहार में कार्बोहाईड्रेट्स केलशियम पर्याप्त मात्रा में है ।

८. मांसाहारी चिड़चिड़े, क्रोधी, निराशावादी होते हैं । शाकाहारी प्रसन्न चित्त, आशावादी सहनशील शान्तिप्रिय होते हैं ।

९. मांसाहारी, शाकाहारी पशुओं का मांस तो खाते हैं पर यह कदापि नहीं विचारते कि हम भी कभी भेड़, बकरी, हिरन, खरगोश सदृश शाकाहार जीवन जियें ।

१०. मांस खाद्यपदार्थ नहीं, होता तो ज्यों का त्यों ही मांसाहारी खा जाते पर वे तो मांस की विकृतियां दबाने, सुस्वादु सुगन्धित बनाने हेतु घी, मसालों का उपयोग करते हैं।

११. सिक्खों के गुरूद्वारों के लंगर में कभी भी मांस नहीं बनता है। अखंड पाठ की समाप्ति पर शाकाहारी भोजन ही परोसने की परंपरा है।

१२. शाकाहारी-मैत्री प्रमोद, करूणा-मध्यस्थता के प्रतीक होते हैं और मांसाहारी शत्रुता, ईर्ष्या, निष्ठुरता, स्वार्थान्धता के प्रतीक होते हैं।

१३. मांस को मीट कहने की बात तो पाखाना को लेट्रिन कहने जैसी है। इससे असुन्दरता-वीभत्सता सुंदरता और सुरुचिपूर्णता नहीं बनती है। मल-मूत्र विसर्जन सदृश मांस भी घृणा और ग्लानि का जनक है।

१४. जब कभी कपड़े से रक्त लगता है तब उसे उतार कर शीघ्र कपडे धोते हैं पर मांस खानेवाले-खून पीनेवाले कभी भी अपने पेट की स्वच्छता की बात नहीं विचारते हैं।

१५. पहले पूर्व देशवाले पूर्णतया धार्मिकता स्वीकार किए शाकाहारी ही थे पर अब पश्चिम की अन्धानुकरमयी नकल करके अपने लिए मांसाहारी बनने में होड़ की दौड़ कर रहे हैं जबकि पश्चिमवाले मांसाहार व शाकाहार की वैज्ञानिक छान-बीन करके स्वास्थ्य के लिए शाकाहार का चयन कर रहे हैं और हम भारतीय अपनी अकल छोड़कर उनकी नकल कर रहे हैं।

१६. शाकाहार, मानव-जीवन-वर्धक है और मांसाहार अपनी, अन्य की हत्याकारक है।

१७. शाकाहार क्रमिक जीवन-वर्धिनी औषधी है, मांसाहार क्रमिक मृत्युवर्धक कालकूट है।

१८. शाकाहार का अर्थ है समुचित सात्विक निर्दोष आहार-भोजन का सर्वोत्तम तरीका। मांसाहार का अर्थ है अनुचित सदोष तामस आहार, निकृष्ट भोजन का सर्वोत्तम तरीका।

१९. शाकाहार, शारिरीक-सामाजिक-धार्मिक-राष्ट्रीय-जैवकीय-आध्यात्मिक सभी दृष्यिों से श्रेष्ठतम साधन है। मांसाहार सभी दृष्टियों से गर्हित और निन्द्य वस्तु है।

२०. शाकाहारी भोजन में प्रोटीन, खनिज, उष्णता है। यह प्रभावक, सहज सुलभ सस्ता है। मांसाहारी भोजन में जहां १६% प्रोटीन है वहां सोयाबीन में ४०%, पनीर में ३५%, मूंगफली में ३०%, मैथी में २६% प्रोटीन है।

२१. शाकाहारी भोजन में जहां लोहा-चूना आदि तत्व प्रचुर मात्रा में है वहां मांसाहार में लोहा-चूना जैसे तत्व लगभग नहीं ही है।

संक्षेप में मांसाहार से शाकाहार उतना बढिया है कि जितना भी शक्य और संभव है।

जहां अहिंसा है वहाँ शाकाहार है और जहाँ शाकाहार है वहाँ अहिंसक भावना भी है।

मानव मन

श्री सुरेन्द्र लोढ़ा (मंदसौर)

मानव मन अत्यन्त चंचल तथा चपल है। क्षण क्षण उसकी धारा में परिवर्तन होता है। ध्वनि या प्रकाश की गति से भी कई गुना तीव्र गति से वह भ्रमण करता है। एक क्षण यदि वाशिंगटन की गगनचुम्बी अट्टालिकाओं को देखने में व्यस्त है तो दूसरे ही क्षण वह मास्को के भव्य राजप्रासादों की छवि में डोलने लगता है। बिना ड्रायवर के राकैट की तरह वह घूमता है अस्थिर बनता है और यात्राऐं करता है।

मन विचारों का उद्‌गम केन्द्र है। वह सदैव सुख व आनन्द चाहता है। थोड़ी सी प्रतिकूलता में पेट्रोल की तरह भभक उठता है। उसे सदैव तृप्ति चाहिये, तृप्ति मिलने पर प्रसन्नता से नृत्य करने लगता है और अतृप्त होने पर दुःख के महासागर में गोते खाने लगता है। तृप्ति और अतृप्ति की स्थिति अनुसार उसके अध्यवसाय बदलते रहते हैं। बदलते हुए अध्यवसायों के अनुरुप ही उसमें विचार तरंगें हिल्लोर लेती है। विचारों में वह कभी अपने को चक्रवर्ती की तरह सम्पन्न मानने लगता है तो कभी भिखारी की तरह विपन्न हो जाता है। मन का प्रवाह व्यक्ति के सभी पहलुओं को प्रभावित किये बिना नहीं रहता।

मन अधिनायक वादी है। वह आत्मा पर हावी होकर इन्द्रियों तथा मस्तिष्क की लगाम अपने हाथों में लेने का प्रयास करता रहता है। नियंत्रक बनकर वह इन्द्रियों को उत्तेजित करता है और उत्तेजना प्राप्त कर इन्द्रियाँ कार्यरत हो जाती है। मन उसका संचालन अपने पास रखता है। बिजली के बटन की तरह मस्त मन इन्द्रियों के बटन दबाया करता है। उसकी शक्ति के सम्मुख पराजित होकर व्यक्ति उसके रंजन व अंजन के साधन ढूंढ़ने लगता है। मानव की अपरिमित क्षमता मन की मांगें पूरी करने में ही जाती है।

मन की भूमि पर ही संस्कारों का बीजारोपण होता है। संस्कार मन को परिधान पहिनाते हैं मन की दिशा निर्धारित करते हैं और मन को मार्ग देते हैं। सुसंस्कारों या कुसंस्कार की तरह मन बनता या बिगड़ता है। संस्कारों के पौधे जब बड़े होकर फल देते है तो व्यक्ति के जीवन पर उनका बहुत प्रभाव पड़ता है। मन की जमीन संस्कारों को आरोपित करने के लिये स्थान देती है। वह उन्हें बड़ा करती है स्व धरोहर के रूप में संरक्षित रखती है।

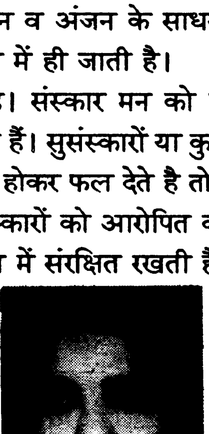

मन निरंतर गतिशील रहता है। उसकी क्रियाएं चालू ही रहती है। व्यक्ति मंदिर में बैठा हो फिर भी वह सड़कों पर भटकता है। कक्षा में बैठे विद्यार्थियों का मन भी फिल्मी तराने गाता रहता है। टेबल पर हस्ताक्षर कर रहे अधिकारी का मन सन्ध्या के कार्यक्रम में गूंथला रहता है। रेल्वे में सफर कर रहे यात्री का मन तिजोरी के तालों तथा घर के दरवाजों में उलझा रहता है और भट्टी के सामने खड़ा मजदूर अपने बच्चों के फटेहाल पर सोचा करता है। मन का विचलित

होना स.मान्य बात है। विश्वामित्र की कठोर साधना मन विचलित हो जाने से निरर्थक हो गई मन विचलित होने से ही विश्वामित्र ने तपस्या का फल नियाणों में मांग लिया और मन की अस्थिरता के कारण ही सन्यासाश्रम छोड़कर मेनका के मृदुवचनों पर भ्रमित हो गये। भयंकर गर्मी में यदि एक घंटा पानी नहीं मिले तो मन विचलित हो जाता है। भीषण गरीबी का सामना होने पर वह आंसू बहाने लगताहै। लाटरी का ईनाम खुलने पर वह अपने आपको आपे में रखने में असमर्थ मानने लगता है।

मन की शक्ति अनन्य है। शक्तिशाली मन शक्ति के बल पर नियमन तथा नियंत्रण करता है। मन की शक्ति का यदि सृजनात्मक उपयोग हो जाय तो व्यक्ति तुरंत विकास की पराकाष्ठा को नापने लगता है किन्तु यदि वह विध्वंसकारी मार्ग की ओर प्रवृत्त हो जाता है तो विनाश के पाताल में भी उसका पता नहीं लगता।

मनोवैज्ञानिक ने मन को दो प्रकार से विश्लेषित किया है - चेतनमन तथा अवचेतन मन। चेतनमन सदैव सक्रिय रहता है वह हमारी क्रियाओं का नियमन एवं नियंत्रण करने का प्रयास करता है। हमारी प्रत्येक प्रक्रिया पर चेतनमन का दबाव होता है। मेरा मन कहता है कि आज वातावरण नम है और गरम गरम पकौड़िया खाई जाय - यह चैतनमन है। भोजन को हम बैठते है हाथ कभी सब्जी की ओर जाता है दूसरे क्षण मिठाई पर बरसता है तीसरे क्षण चटनी के लिये लपकता है, चौथे क्षण नमकीन पर जाता है फिर सब्जी पर जाता है। अव्यवस्थित क्रम की तरह हमारा हाथ एक के बाद दूसरी वस्तु पर घूमता रहता है। कौन संचालक होता है - चेतनमन। चेतनमन की चेतना गतिरत रहती है।

अवचेतनमन प्रसुप्त होता है - वह कभी सक्रिय नहीं रहता किन्तु उसमें संस्कारों का संग्रह होता है। अवचेतनमन केवल फूंक लगाने का भागीदार होता है। जैसे उसमें संस्कार होते है उसके अनुसार हैण्डल घूमाकर वह चेतन मन की दिशा निर्धारित कर देता है। अर्न्तद्वनूद उठने का कारण यही है कि अवचेतन मन संस्कारों के अनुसार चेतनमन को नियमित करने का प्रयास करता है। यदि संस्कार अच्छे होते है तो चेतनमन की दिशा सुदिशा होती है। यदि संस्कार बुरे होते है - तो चेतनमन कुदिशा की ओर प्रकृत हो जाता है।

अष्टमी को घर सूचना मिली कि आज हरी वनस्पति का उपयोग वर्जित है इसलिये आम का क्रय नहीं होगा। बाजार में गये रसदार पके सुस्वाद आम्रफलों को देखते ही चेतनमन फिसल पड़ा। अवचेतन मन यहां अष्टमी की स्मृति दिलायेगा और एक अन्तर्द्वन्द उठ खड़ा होगा। चेतनमन आम पर बावला होकर क्रय करने के लिये उत्प्रेरित करेगा किन्तु अवचेतनमन उसका विरोध कर स्पष्ट कहेगा कि अष्टमी को हरी वनस्पति का उपयोग नहीं किया जा सकता यहां यदि अवचेतन में सुसंस्कारों का संग्रह हुआ तो निश्चित रूप से अवचेतनमन चेतनमन की उत्तेजना को निस्तेज कर लेगा किन्तु यदि कुसंस्कारों का संग्रह हुआ तो वह चेतनमन से सहमत होकर आम खरीदने की बात को बल दे देगा। अन्तर्द्वन्द में विजय सदैव अवचेतन मन की होती है और उसका पक्ष उसके संस्कारों के अनुसार होता

है। डाकू गोली चलाने में भी भय क्यो नहीं खाते और हम चीटों का दिल दुखाते भी क्यों दयार्द्र हो जाते हैं। स्पष्ट है डाकुं के संस्कार इतने क्रूर खूंखार व नास्तिक होते है कि चेतनमन अवचेतनमन तथा आत्म पुरुषार्थ की सभी शक्ति एक मत पर एकत्र हो जाती है जबकि संस्कार हमें दयार्द्र बनाये रखते है। अवचेतनमन में संग्रहित संस्कार ही मार्ग प्रक्षस्ता हैं।

अवचेतन मन का पूरा नर्तन संस्कारों की भूमि पर होता है। वह चौकीदार की तरह जो चेतनमन की रखवाली करता है। चेतनमन अस्थिर तथा चंचल होता है। उसे तो जैसी उत्तेजना मिलती है वैसा ही करने को तत्पर हो जाता है। सड़क के सौन्दर्य पर मोहित होना एवं मिठाई की दुकान के सामने से जाते हुए मिठाई कक्षों पर भ्रमर की तरह भ्रमण करना उसके लिये साधारण तथ्य है। क्षण क्षण वह बिगड़ता व प्रसन्न होता रहता है। वह तो रबर की तरह है जिधर जितनी मात्रा में खींचाव होता है खींच जाता है। चेतनमन का कार्य ही यही है इन्द्रियों से सांठ गांठ कर आवेशित होते रहता है। जिसमें अनुकूलता होती है वैसे ही करने के लिये उसमें तीव्रता हो जाती है। बिस्तर पर सोये व्यक्ति को वह सौ बार करवटें बदलने के लिये बाध्य कर देता है। उसमें कोई विवेक नहीं होता। समय आने पर विष भक्षण के लिये भी प्रेरित हो जाता है।

चेतनमन की नकेल अवचेतन मन अपने हाथ में रखता है और संस्कारों के अनुसार चेतनमन को घूमाता रहता है।

सदियों से सूर्य अपने प्रभापुंज की प्रचण्ड उष्मा से प्रभासित हो रहा है किन्तु कभी कोई कागज का टुकड़ा ज्वलित नहीं हुआ। यदि उसी सूर्य की कुछ रश्मियों को लेन्स की सहायता से किसी कागज पर केन्द्रित करें तो दो मिनट में कागज जलने लगता है। कारण यही कि लेन्स ने रश्मियों को एकत्र कर एक बिन्दु पर एकेन्द्रित कर दिया। धर्म आचरण में भी बरसों से हम अपनी क्रियाओं, तपस्याओं तथा विचारों की रश्मियां बिखेर रहे हैं लेकिन आत्मा से कर्मों के टुकड़े तब तक ज्वलित नहीं हो सकते जब तक की कोई लेन्स सभी रश्मियों को एकेन्द्रित नहीं कर दे। आत्मा के लिये यह लेन्स है ध्यान।

ध्यान याने मन का एकेन्द्रिकरण, मन का स्थापन या मन की शक्तियों का संग्रहण। जब किसी नई वस्तु को देखते हैं तो नेत्र वहीं ठहर जाते हैं - मन एकेन्द्रित हो जाता है - पुनः पुनः वस्तु की प्रशंसा करता है। उसको देखते रहने का संकल्प करता है। जब इच्छित वस्तु मिल जाती है तो मन उसी के रंग से रंजित हो जाता है - देर तक प्रसन्नता से पूर्ण रहता है - उसी के सम्बन्ध में विचारधारा प्रर्वत्र करता है। जब किसी परिजन की मृत्यु हो जाती है तो मन में शोक का प्रात् फूट पड़ता है - वह परिजन के वियोग में चारों ओर ही घूमता रहता है, बार बार खेद करता हुआ दुःखी हो जाता है। बार बार प्रशंसा करना दुःखी होना प्रसन्नता से पूर्ण हो जाना यह सब ध्यान की प्रक्रियाएं है। मन का चलन जब रूक जाता है और वह किसी केन्द्र बिन्दु पर ठहर जाता है तो उसे ध्यान की अवस्था कहते है। संस्कार अवचेतनमन में ध्यान के माध्यम से ही प्रकृष्ठ होते हैं। जब हम कोई क्रिया करते हैं और चेतनमन उस पर स्थिर हो जाता है तो वह क्रिया संस्कार बनकर अवचेतन

मन की तिजोरी में संग्रहित हो जाता है।

पालीताना तीर्त्रयात्रा पर गये - चेतनमन आदीनाथ जी की भव्य छवि को देखकर रूक गया और ध्यान ने उसे ग्रहण कर लिया तो जिनेश्वर भक्ति के गण ने अवचेतन मन में प्रवेश प्राप्त कर लिया और अब जब भी जिनेश्वर देव की प्रतिमा सामने आयेगी चेतनमन चाहे सिर झुकाने में संकोच करेगा किन्तु अवचेतन मन प्रेरित कर चेतनमन को नियंत्रित कर लेगा। ध्यान संस्कारों की माता है।

ध्यान को दो प्रकार में विभक्त किया गया है - अशुभ ध्यान एवं शुभ ध्यान। जब मन अशुभ उद्देश्य को प्राप्तकर अशुभ केन्द्रों पर एकेन्द्रित होता है अशुभ ध्यान की प्रतीति सम्मुख आती है। जैसे छविगृह में चलचित्र देखकर मन में उसकी कथा, गीतों, नृत्य व कलाकारों की भावभंगीमाओं का पुनः प्रत्यक्षीकरण करना। स्वादिष्ट भोजन कर उसके जायके का बारबार मनोमन स्वाद ग्रहण करना। विपरित जब मन शुभ उद्देश्य को प्राप्त कर शुभ केन्द्र पर एकेन्द्रित होता है तो शुभ ध्यान की उत्पत्ति होती है, जैसे संवत्सरी के दिन उपवास करने के बाद उसकी बार बार अनुमोदना एवं पुनः पुनः यह स्मरण कि - धन्य है आज का मंगलमय दिवस जब मुझे आत्मशुद्धि का अपूर्व अवसर प्राप्त हुआ।

अशुभ ध्यान दो वर्गों में विभाजित किया गया है

(१) आर्तध्यान (२) रौद्रध्यान। अनिष्ट संयोग इष्ट वियोग रोग चिन्ता तथा भोग की तीव्र लालसा से वशीभूत होकर मन को उसी की प्राप्ति में रत रखना आर्तध्यान कहा जाता है। प्राणियों की हिंसा करने सम्बन्धि असत्य बोलने के विषय में चोरी करने एवं विषय भोगों की सामग्री के संरक्षण का चिन्तन करना रौद्र ध्यान कहलाता है।

शुभ ध्यान के दो प्रकार (१) धर्म ध्यान तथा (२) शुक्ल ध्यान। वीतराग महापुरुषों के वचनों का सतत् बहुमान सांसारिक सुखों से निर्वेदभाव संसार रचना के सम्बन्ध में चिन्तन तथा कर्म के शुभाशुभ विचार का मनन धर्म ध्यान कहलाता है। आत्म शक्तियों के साक्षात्कार की चरमावस्था में जो ध्यान होता है वह शुक्ल ध्यान का स्वरूप होता है।

जीवन विकास के मूल आधार संस्कार है। संस्कार सिमेन्ट कांकरीट की तरह है जो स्वरूप को सुदृढ़ बनाते हैं। मन ध्यान एवं संस्कार इन तीन की जीवन मार्ग पर महत्वपूर्ण भूमिका है। जीवन की पवित्रता के लिये उनकी शुद्धता एवं पवित्रता अनिवार्य आवश्यकता है।

संस्कार वह यंत्र है जिसमें से जीवन व्यवहार छान फिल्टर होकर बाहर उद्‌गमित होता है। सुसंस्कारों का बीज पल्लवित होकर अमृत फल प्रदान करता है, जब कि कुसंस्कार का बीज फलित होकर विषफल प्रस्तुत करता है। अमृत फल भवों भवों तक आत्मा को सत्कार्यों सद्विचार सद्व्यवहारों में प्रवृत्त करता रहता है तथा विषफल आत्मा में भवों भवों तक दुष्कृत्यों दुर्विचार दुर्व्यवहार का विष प्रसारित करता रहता है। संस्कार जीवन नेत्रों पर चढ़ने वाला चश्मा है।

संस्कार अवचेतन मन में रहते है तथा उनके उद्‌गम का प्राथमिक बिन्दु ध्यान है।

ध्यान मन के अध्यवसायों के अनुरूप स्वरूप ग्रहण करता है। अतएवं प्रथम अनिवार्यता सुसंस्कारों के लिये मन के विषय की पवित्रता है। मन दुष्प्रवृत्ति की गटरों में नहीं उसका कार्य सुप्रवृत्ति के नन्दनवन में भ्रमण करना होना चाहिये। मन के आलम्बन की। (वह बिन्दु जहां जाकर वह ठहरता है) शुद्धि पर ही शुभ ध्यान की परिप्राप्ति निर्भर करती है। शुभ ध्यान संस्कारों का सिंचन करता है।

इस प्रकार मन, ध्यान, संस्कार ये तीन शब्द जीवन विकास के धरातल का निर्माण करते हैं जिनका सुघढ़ीकरण एक दूसरे पर अवलम्बित है। मन के अध्यवसाय अच्छे हो ध्यान का आलम्बन अत्कृष्ट हो और संस्कारों का संग्रह सर्वोत्कृष्ट हो तभी जीवन की धारा गंगोत्री का रूप लेकर पावनता प्राप्त कर सकती है।

मुक्तक

मुनिश्रीतरूणसागरजी

३६ और ६३

हे सखे।
संसार में रहो।
पर ऐसे
जैसे जल से भिन्न कमल है।
अथवा
पंक मध्य भी
र्स्वण सदा निर्मल है।
संसार के प्रति
३ के आगे ६ बन जाओ
धर्म के प्रति
६ के आगे ३ बनकर दिखाओ।
दुनिया के सब दन्द-फन्द
-छोड़
निज में खो जाओ
और
पा जाओ जीवन चमन।
रे चपल मन।
कर तू अर्हत् का भजन ॥

नर वानर

हे सखे।
आहार निद्रा भय मैथून
नर पशु एक समान हैं।
नर नारायण बन सकता है
यही उसकी आन है
इसी लिए वह महान है
मिलता उसे सम्मान है
तो।
नर से नारायण बनना था
बन गये नर से वानर।
नर से नारायण बनना था
बन गये नर से नाहर।
नर से नारायण बनना था
बन गये नर से नारद।
नर से नारायण बनना था
बन गये नर से रावण।
नर से नारायण बनना था
बन गये नर से नर्क
तो।
पशु और तेरे जीवन में
आखिर क्या है फर्क ?

साहित्य स्वीकार

❀ **चलो! सोचे!! विचारे!!! अंधःकार कहाँ? प्रकाश कहाँ? :** लेखक - मुनिश्री जयानंदविजयजी, प्रकाशक - श्री थराद जैन संघ - थराद, प्राप्ति-स्थान - शा. देवीचंद छगनराजजी, सदरबाजार, भीनमाल, जि. जालोर - ३४३ ०२९ मूल्य - सदुपयोग। (पोस्टेज खर्च - दो रूपये)

मुनिश्री यशोरत्नविजयजी द्वारा लिखित पुस्तक 'चलो चलें अंधकार से प्रकाश की ओर' में किये गये प्रश्नों के उत्तर के रूप में आगमोक्त आचरणाओं के अनुरूप शास्त्रोक्त मार्ग को प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक द्वारा पाठकगण त्रिस्तुतिक सिद्धान्त की शास्त्रीयता का अनुभव करेंगे।

❀ **दशवैकालिक-सूत्र :** सम्पादन - मुनि श्री जयानंदविजयजी म. सा., प्रकाशक - श्री भीनमाल जैन संघ - भीनमाल, प्राप्तिस्थान - १) जे. के. संघवी (सम्पादक) शाश्वत धर्म कार्यालय - जामली नाका, थाने। २) शा. देवीचंद छगनराजजी, सदरबाजार, भीनमाल, जि. जालोर - ३४३ ०२९ (राज.) मूल्य - सदुपयोग (मंगवाने हेतु पोस्टेज खर्च - दो रूपये)

मूल श्रुतकेवली युगप्रधानाचार्य श्री शय्यम्भवस्वामीजी द्वारा रचित दशवैकालिक सूत्र' को आगम की संज्ञा दी गयी है, इसे इन्होंने अल्पायु शिष्य मनक के लिये बनाया था। यह सूत्र साध्वाचार मूलक है, अतएव साधु-साध्वियों को इसका अध्ययन करना आवश्यक है क्यों कि समस्त गच्छों की मर्यादा के अनुसार इस ग्रंथ का अभ्यास किये बिना साधु-साध्वी बड़ी दीक्षा के योग्य नहीं समझे जाते। मूलसूत्र के साथ शब्दार्थ व भावार्थ दिये गये हैं।

❀ **समाधान की किरणें :** लेखक - मुनि श्री जयानंद विजयजी म. सा. प्रकाशक - मरूधर मेटल्स प्रा. लि. ६११ जी. आई. डी. सी. (वटवा) अहमदाबाद, प्राप्ति-स्थान - १) भावेश उद्योग १५१, बापू खोटे स्ट्रीट, बम्बई - ४०० ००४। २) जे. के. संघवी (सम्पादक), शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका, थाने। ३) शा. देवीचंद छगनराजजी, सदरबाजार, भीनमाल, जि. जालोर - ३४३ ०२९ (राजस्थान), मूल्य - सदुपयोग (मंगवाने हेतु पोस्टेज खर्च - दो रूपये)

साध्वाचार विषयक २६५ प्रश्नोत्तरों को प्रकाशित किया गया है।

❀ **श्री आदि जिन भक्ति वंदना :** सम्पादन - मुनि श्री जयानंद विजयजी म. सा., प्रकाशक व प्राप्ति स्थान - श्री आकोली जैन नवयुवक मंडल एवं अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक मंडल - आकोली, राजस्थान।

पूर्वाचार्योंकृत स्तवन एवं नवीन तर्जों पर भक्तिगीतों का संकलन प्रकाशित किया गया है। संलग्न आकोली का इतिहास व चैत्यवंदन विधी दर्शन विधि, भी दी गयी है।

समाचार दर्शन

परम श्रद्धेय आचार्य श्री का १२ मई को नेल्लोर में मंगल-प्रवेश

प्राप्त समाचारों के अनुसार प. पू. राष्ट्रसंत आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी अपने मुनिमंडल के साथ कराड, बीजापूर बल्लरी नालतवाड, अदोनी होते हुए १२ मई को नेलोर पधारेंगे। जहाँ आपकी निश्रा में रामाणी परिवार द्वारा नवनिर्मित श्री राजेन्द्रसूरि किर्ती मंदिर का प्रतिष्ठोत्सव जेठ सुदि ११ दि. ३१-५-१९९३ को संपन्न होगा।

पू. आचार्य भगवंत से पत्रव्यवहार का पता -

Aacharya Shree Jayantsensuriji
Shree Rajendrasuri Jain Kirti Mandir
Rajendra Nagar, Indkur Peth, Nellore - 524 001 (A.P.)

भगवान महावीर जयंती पर सैकड़ों विद्यार्थियों द्वारा मांसाहार छोड़ने की प्रतिज्ञा

गुंदुर - श्री राजेन्द्रसूरि जैन सेवा समिती के तत्वावधान में भगवान महावीर जन्म कल्याणक के अवसर पर श्री पिलारामकृष्णजी, श्री वाई, रामेश्वर रेड्डी, श्री टी. रामन्ना आदि के सहयोग से विविध स्कूलों में अहिंसा व शाकाहार सम्वन्धी विषयों को लेकर व्याख्यान के कार्यक्रमों का पंचदिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया। फलस्वरुप कई विद्यार्थियों ने भविष्य में मांसाहार न करने की प्रतिज्ञा ली। उन्हें प्रमाण-पत्र भी वितरित किये गये। लेखन एवं भाषण प्रतियोगिताओं के आयोजन में कई विद्यार्थियों ने भाग लेकर अपनी आस्था प्रकट की।

महावीर जन्मोत्सव का कार्यक्रम मात्र शोभायात्राओं तक सीमित न रखकर उपरोक्त संस्था द्वारा यह अभिनंदनीय कार्यक्रम रखा गया जो वास्तव में प्रेरणास्पद है। अन्य नगरों में भी इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन अपेक्षित हैं।

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र-कोबा में विविध कार्यक्रम

प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी की निश्रा में २५-४-१९९३ से २९-४-९३ तक पंच दिवसीय भव्य महोत्सव के अंतर्गत जिनालय की दो देवकुलिकाओं में प्रभु प्रतिष्ठा, आचार्यश्री कैलाशसागरसूरिजी की अग्निसंस्कार स्थली पर विनिर्मित स्मारक मंदिर की प्रतिष्ठा, श्री कैलाशसागरसूरिजी जैन ज्ञान-मंदिर का उद्‌घाटन, वरसीतप के पारणे एवं पंन्यास श्री धरणेन्द्रसागरजी को उपाध्याय पदवी एवं गणीवर्य श्री वर्धमानसागरजी को पंन्यास पदवी प्रदान की जायेगी।

पारा में महिला परिषद के चुनाव सम्पन्न

पारा - भुतपूर्व शाखा अध्यक्ष - श्री वरदीचंदजी छाजेड़ की अध्यक्षता में अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद शाखा-पारा के चुनाव निर्विरोध संपन्न हुए। जिसमें श्रीमति मीना काठेड़ (अध्यक्ष), कुमारी संगीता छाजेड़ (मंत्री) निर्वाचित की गई।

समाचार – सार

दलौदा - भगवान महावीर जन्मोत्सव निमित्त प्रार्थना, पूजा, आंगी व विशाल शोभायात्रा आयोजित की गयी।

उज्जैन-श्रीराजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मन्दिर ट्रस्ट के चुनाव में अध्यक्ष - श्री सोहनलालजी वाफना; उपाध्यक्ष - श्री पारसमलजी तलैरा व श्री श्रेणिकलालजी बनवट; सचिव-श्री रमणिकलालजी कोठारी; कोपाध्यक्ष-श्री माणकलालजी गिरिया; व्यवस्थापक-श्री रमणिकलालजी तलैरा व अन्य ट्रस्टी चुने गये।

कोटा - मुनिश्री शीलरत्नविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में नवपदजी ओली आराधना व महावीर जन्म कल्याणक उत्साह पूर्वक मनाया गया।

महाबलेश्वर-शाह नागरदास कानजी परिवार-वम्बई की ओर से निर्मित श्री महावीरस्वामी जिन मंदिर की प्रतिष्ठा वैसाख सुदि ६ को आचार्यश्री भद्रगुप्तसूरिजी की निश्रा में सम्पन्न हुई।

इन्दौर - श्रमण संस्कृति विद्या वर्द्धन ट्रस्ट के तत्वावधान में १० दिवसीय सामाजिक एवं धार्मिक क्रियाकांड शिक्षण प्रशिक्षण शिविर १ जून से आयोजित किया जायेगा।

नवसारी - आचार्यश्री प्रवोधनचंद्रसूरिश्वरजी की निश्रा में भगवान महावीर जन्म कल्याणक निमित्त भव्य शोभायात्रा व प्रवचन सभा आयोजित की गयी। जैन सोश्यल ग्रुप द्वारा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें स्थानीय सभी महिला मंडलों ने भाग लिया।

कोसेलाव - आचार्य श्री सुशीलसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में ११ जून को १०८ जिन-प्रतिमाओं की अंजनशलाका, प्राण प्रतिष्ठा व ५१ छोड़ का उजमणा सम्पन्न होगा।

मेडता सिटी - आचार्य श्री सुशीलसूरीश्वरजी की निश्रा में प्राचीन श्री शान्तिनाथ जिन मंदिर एवं धर्मनाथ जिन मंदिर में प्राचीन व नूतन जिनविम्वों की अंजनशलाका प्रतिष्ठा व योगीराज श्री आनन्दघनजी म. स्मृति मंदिर तथा दादावाडी की प्रतिष्ठा वैसाख सुदि ६ को सम्पन्न हुयी।

इन्दौर - श्री दिगम्वर जैन महासभा के तत्वावधान एवं मुनि श्री तरूणसागरजी की निश्रा में स्याद्वाद शिक्षण शिविर २७ एप्रिल से ४ मई तक आयोजित किया गया।

अलिराजपूर - अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद शाखा अलिराजपूर के चुनाव सम्पन्न हुए। जिसमें अध्यक्ष - श्रीमति कुसुमलता काकड़ीवाला, कोपाध्यक्ष - श्रीमति शशीकला अशोककुमारजी एवं मंत्री - श्रीमति धीरज जैन सर्वसम्मति से नियुक्त की गई।

लक्ष्मणीतीर्थ (अलिराजपुर) -श्रीलक्ष्मणीतीर्थ पर चैत्र सुदि १५ को महावीर पंचकल्याणक श्री सिद्धाचलजी पट के सामूहिक दर्शन वन्दन, आरती, पूजन एवं विविध कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। इस अवसी पर श्री संघ अलीराजपूर की ओर से स्वामीवात्सल्य का आयोजन कर रात्री भावना रखी गई।

अलिराजपूर - श्री महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव चैत्र सुदि १३/१४ रविवार को चल समारोह एवं दोपहर को पंचकल्याणक पूजन के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। गरीवों को भोजन वितरीत किया गया।

इन्दौर - श्री कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ इन्दौर द्वारा जैन विद्याओं के अध्ययन को प्रोत्साहित करने हेतु शोधार्थियों के आवास वांछित साहित्य, मार्गदर्शन एवं शोध प्रवन्धों के टंकण की व्यवस्था की गई है। जो विद्वान ज्ञानपीठ के माध्यम से अपना शोधकर्म सम्पन्न करेंगे, उनके प्रवास एवं अन्य नैमत्तिक व्ययों की व्यवस्था ज्ञानपीठ के द्वारा की जा सकती है। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें। देवकुमारसिंह कासलीवाल अध्यक्ष - कुन्द कुन्द ज्ञानपीठ ५८४ एम. जी. रोड़, इन्दौर - ४५२ ००१ (म. प्र.)

शोक श्रद्धांजली

तप-त्याग-तेजस्विता की प्रतिमूर्ति पू. आचार्य श्री भुवनभानुसूरीश्वरजी कालधर्म को प्राप्त हुए

अहमदावाद - १०८ वर्धमान तप ओली के आराधक समर्थ साहित्य सर्जक प.पू. आचार्य श्री भुवनभानुसूरीश्वरजी का समाधिपूर्वक स्वर्गवास मंगलवार दि. १९-४-९३ को अहमदावाद (पालडी) में हृदयघात से हुआ। बुधवार को विशाल गुरूभक्तों की उपस्थिती में अग्निसंस्कार किया गया।

आपका जन्म कांतीलाल के रूप में अहमदावाद में संवत् १९६७ के चैत्र वदि ६ को माता भुरीवहन की कुक्षी से हुआ। पिता का नाम श्री चीमनलाल था। आप वचपन से ही व्यवहारिक तथा धार्मिक अभ्यास में परिपूर्ण थे। आप आर्ट्स कालेज में प्रथम वर्ष में द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए थे। एवं उस समय जी.डी.ए. की उपाधि प्राप्त की जो आज सी.ए. के समकक्ष है।

वैराग्य के रंग में रंगे कांतिलाल ने अपने भाई के साथ चाणस्मा में विराजमान पू. उपाध्याय श्री प्रेमविजयजी गणिवर (प्रेमसूरीश्वरजी) से संवत १९९१ पौष सुदि १२ को दीक्षा अंगीकार की एवं भानुविजयजी नामकरण किया गया। विलक्षण बुद्धि के कारण आपने न्याय दर्शन एवं आगमों का गहन तलस्पर्शी अध्ययन किया। संयम यात्रा में विकास करते हुए क्रमशः आपको संवत २०२९ मगसर सुदि २ को आचार्यपद से अलंकृत किया गया एवं आचार्य भुवन भानुसूरीश्वरजी के नाम से प्रसिद्ध हुए। पिछले ३५ वर्षों से 'दिव्यदर्शन' गुजराती साप्ताहिक द्वारा आपकी आध्यात्मिक वाणी जिज्ञासुओं को संतुष्ट करती रही है। आज प्रभावशाली प्रवचनकार थे। २०० से अधिक शिष्यों में संयममार्ग प्रदान कर आपने अजोड शासन सेवा की है। युवा वर्ग में धर्म के प्रति अभिरूचि जागृत करने के लिये ग्रीष्म ऋतु में २१-२१ दिन की आध्यात्मिक शिविरों का आयोजन, जैन संघ को आपके द्वारा प्रथम भेंट थी। आप शिविरों में निरंतर ५-५ घंटे वाचना देते थे।

आपके स्वर्गगमन से जैन संघ को एक विद्वान आचार्य की अपूरणीय क्षति हुयी है।

शाश्वत धर्म परिवार के द्वारा पूज्य श्री के चरणों में भावभरी श्रद्धांजली व कोटी-कोटी वंदना।

कचनारा - कचनारा निवासी श्री केसरीमलजी ओसवाल का स्वर्गवास १ मार्च को हुआ। स्वर्गस्थ ने पिछले सप्तवर्षों से आजीवन ब्रह्मचर्य, रात्रिभोजन त्याग, कंदमूल सर्वथा वंद, नित्य प्रभु पूजन आदि व्रत नियम ग्रहण किये थे। पिछले वर्ष सिद्धाचलजी की नव्वाणुयात्रा की थी। आपके सुपुत्र - श्री अशोककुमार ने संवत २०४२ मगसर सुदि ११ को सियाणा में दीक्षा अंगीकार कर राष्ट्रसंत जैनाचार्य - श्रीमद्विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी के शिष्य पद्मरत्नविजयजी के रूप में रत्नत्रयी की आराधना कर रहे हैं। शाश्वत धर्म परिवार की ओर से सद्गत आत्मा को भावभरी श्रद्धांजली।

उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी का निधन

उदयपुर (राजस्थान) - श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ श्रमण के उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी म. का ३ अप्रैल १९९३ की रात्रि को ६.१८ वजे ४१ घंटे के संथारे के पश्चात् स्वर्गवास हो गया। आपने ६८ वर्ष का दीर्घ संयम जीवन व्यतीत किया।

पू. उपाध्यायजी वर्तमान श्रमण संघ के आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि म. के गुरू थे। उपाध्यायजी की अन्तिम शव यात्रा ५ अप्रेल १९९३ सोमवार को प्रातः ११ बजे जैन तारक गुरु ग्रन्थालय से प्रारम्भ होकर मुख्य-मुख्य स्थलों से होती हुई अग्नि संस्कार स्थल पर पहुँच कर सम्पन्न हुई। आपकी शवयात्रा में हजारों श्रद्धालुजनों ने सम्मिलित होकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

मेवाड़ के प्रसिद्ध गोगुन्दा के निकट सिमटार ग्राम में जन्मे श्री अम्बालाल ने वि. संवत १९८१ की ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को पूज्य श्री ताराचन्दजी महाराज के मुखारविंद से जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की। आपके पिता श्री सूरजमलजी एवं माताश्री वालीवाई थे। श्रद्धेय उपाध्यायश्री ने देश के विभिन्न नगरों में पैदल भ्रमण कर भगवान महावीर के सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार किया। आपकी सद्प्रेरणा से अनेक संस्थाओं की स्थापना हुई। शाश्वत धर्म परिवार की ओर से पू. श्री के चरणों में श्रद्धांजली एवं कोटी-कोटी वन्दना।

- आपका पत्र मिला -

* शाश्वत धर्म पत्रिका मिली। पत्रिका में क्या आप जानते हैं, रुकिये! पढ़िये!! सोचिये!!! बहुत सराहनीय है। आशा है शाश्वत-धर्म इसी तरह हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा।

- राकेश वसन्त जैन - जोगेश्वरी (बम्बई)

* सम्पादकीय सुद्दष्टि और साहित्यकार आचार्यदेवश्री की भावना सृष्टि की परिचायक पत्रिका मिली। उपकृत हूँ। धर्म-चिन्तन और भारतीय संस्कृति के प्रति अनुरागपूर्ण लेखमाला से अलंकृत ''शाश्वत-धर्म'' सही अर्थ में एक उत्कृष्ट सामयिक है। अपनी सामग्री से वाचकों को परितृप्त करने में सक्षम है। हार्दिक मन कामना है कि ''शाश्वत-धर्म'' का प्रकटीकरण शाश्वत रहे। **- प्रल्हाद पटेल - वड़नगर (गुजरात)**
* फरवरी-मार्च का 'शाश्वत धर्म' आज ही मिला। छपाई-सफाई-कागज सुंदर है। मानपाड़ा श्री शांतिनाथ जिन मंदिर एवं गुरू मंदिर की भव्य प्रतिष्ठा कराकर आपने अपनी लक्ष्मी का सम्यक् सदुपयोग किया है। मेरा अभिनंदन स्वीकार करें। **- पुखराज भंडारी - बागरा (राजस्थान)**
* शाश्वत धर्म ज्ञान प्राप्त करने की अच्छी पत्रिका है। पढकर खुशी होती हैं हमारी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं। **- प्रवीण जैन - मेंगलवा**

ज्ञान कसौटी २३ के उत्तर

(५५१) मरुदेवी माता, (५५२) जंबू स्वामीजी, (५५३) चार प्रकार - आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान, शुक्लध्यान, (५५४) शांतिनाथजी, कुन्थुनाथजी, अमरनाथजी, (५५५) प्रत्येक इक्कीस हजार वर्ष का, (५५६) नमस्कार महामंत्र, (५५७) वरकाणाजी, नाडोल, नाडलाई, घाणेराव व राणकपुरजी, (५५८) योगमुद्रा, (५५९) बत्तीस दोषों को, (५६०) नामस्तव, (५६१) पुष्पदंत, (५६२) अरिष्टनेमि, (५६३) साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, मंदिर, मूर्ति व ज्ञान, (५६४) देवपूजा, गुरुभक्ति, स्वाध्याय, संयम, तप एवं दान, (५६५) चक्रवर्ती राजा भरत, (५६६) सेठ करमाशाह, (५६७) श्री नंदिषेण मुनि ने, (५६८) अजितनाथजी व शांतिनाथजी, (५६९) वाचक प्रवर श्री उमास्वातिजी महाराज, (५७०) आचार्य श्री शय्यंभवसूरिजी, (५७१) सिद्धचक्रजी, (५७२) परदेशी राजा, (५७३) आचार्य श्री भद्रबाहुस्वामीजी, (५७४) गौतमस्वामीजी, (५७५) १४४४

હિસાબ જિંદગીનો...

– મુનિશ્રી પ્રશાન્તરત્ન વિજયજી મ.સા.

આપણું જીવન કેટલું લાંબુ છે ? તે આપણે જાણતા નથી, કેટલી લાંબી આપણી જિંદગીની કેવી સુખદ કે દુઃખદ સ્થિતિ છે ? એ આપણને પત્તો પણ નથી. આપણને તો એ પણ ખબર નથી કે આપણું મુલ્યવાન જીવન કેવી રીતે પસાર થઈ રહ્યું છે ? આપણે હોંશમાં તો છીએને કે પછી બેભાન ?

પેલા કવિરાજે ગાયું છે ને –

"મોહ મહામદ પિયો અનાદિ, ભૂલ્યો અપની ભરમત વાદે."

આપણને તો મોહની અતિ તેજ શરાબ પીવાની આદત પડી ગઈ છે. તેથી આપણે પોતાની જાતને ભૂલી ગયા છીએને ! આ સંસારચક્રમાં ફોગટના આમથીતેમ ભટકી રહ્યા છીએ. ક્રિકેટની માફક આપણી કર્મસત્તા દ્વારા જ્યાં ત્યાં કેવળ ફેંકાફેંક રૂપ વિડંબના જ થઈ રહી છે.

મનુષ્યનું જીવન ક્યા તબક્કામાંથી પસાર થઈ રહ્યું છે તેના હિસાબ માટે એક ઉદાહરણ પુરાણોમાં સુંદર ટાંકેલું છે.

બ્રહ્માજી એ વખતે દરબાર ભરીને બેઠા હતા. સભામાં બધીજ જાતનાં પ્રાણીઓ પોત-પોતાને યથાયોગ્ય સ્થાને બેઠાં હતા. બ્રહ્માજી પોતેજ દરેક પ્રાણીઓને આ જગતની રંગભૂમિ પર જઈને પોત-પોતાના વિષયક કાર્યવાહી કરવાનું સમજાવતા હતા.

સભામાં Pin Drop Silence હતી ત્યારે સર્વ પ્રથમ એક ગધેડાને બોલાવી બ્રહ્માજીએ સમજાવ્યું.

"જુઓ તમારે મનુષ્ય લોકમાં જવાનું છે અને મનુષ્યોની સુંદરતમ સેવા બજાવવાની છે. એમની માલ-સામાન ઉપાડીને હેરાફેરી કરવાની છે. બદલામાં એ લોકો જે કંઈ લુખું, સુકું તમને જમવાનું આપે તે ખાઈ લેવાનું, વધુ ભૂખ લાગે તો જ્યાં-ત્યાં, ગધેડાએ વચમાં પૂછી નાખ્યું "ભગવાન એતો બધુ ઠીક છે પણ મારૂ આયુષ્ય કેટલું રહેશે ? એતો બતાવી દો." બ્રહ્માજીએ કહ્યું જા, તારૂં આયુષ્ય ત્રીસ વર્ષનું રહેશે" આ સાંભળી તુર્તજ ગધેડો બોલ્યો, "ભગવાન ! આ તો ઘણું કઠણ કામ છે. આટલી લાંબી જિંદગી હું ત્રીસ વર્ષ સુધી લોકોના માલ-સામાન નહીં ખેંચી શકું, મહેરબાની કરી મારૂં આયુષ્ય ઓછું કરી આપવા કૃપા કરશો."

બ્રહ્માજી બોલ્યા, "ઠીક છે જા તારી ઉંમરમાંથી હું વીશ વર્ષ ઘટાડી દઉ છું. હવે તારી ઉંમર માત્ર દશજ વર્ષની રહેશે બસ."

ગધેડું ખુશ થઈને મનુષ્યલોકમાં ચાલી આવ્યું.

ગધેડા પછી નંબર આવ્યો વાંદરાનો.

બ્રહ્માજીએ તેને ઉદ્દેશીને કહ્યું "બંદરજી ! હવે તમારે પણ મનુષ્યલોકમાંજ જવાનું છે. તમારા વિવિધ પ્રકારના ખેલ બતાવી લોકોના દિલને આનંદ આપવાનો છે. મનોરંજન કરવાનું છે. તમે પણ પૃથ્વી પર પુરાં ત્રીસ વર્ષ જીવશો."

વાંદરો બોલ્યો, "હે ભગવાન ! આટલી બધી લાંબી જિંદગીની મારે કોઈજ જરૂર નથી. કુદાકુદ કરવામાં આટલા વર્ષ શેં પસાર થાય ? કૃપા કરીને મારી ઉંમર થોડીક ઘટાડી આપો."

બ્રહ્માજીએ એની ઉંમરનાં દશ વર્ષ ઓછાં કરી દીધા.

હવે આવ્યો કુતરાનો વારો !

"અરે કુત્તા ! તારે માણસોનું વફાદાર થઈને રહેવાનું છે અને એમનાં ઘરોનું રક્ષણ કરવાની પણ તારી જવાબદારી છે. બદલામાં જે લુખી સૂકી રોટલીના ટુકડા આપે તે ખાઈ લેવાના અને તેમાંજ સંતોષ માનવાનો છે. તારૂં જીવન પણ ત્રીસ વર્ષ ચાલશે."

કુતરો પણ આટલી લાંબી જિંદગી સુધી માણસોની વચ્ચે વસવાનું પસંદ કરતો ન હતો. એટલે એણે પણ પોતાની ઉંમર ઓછી કરી આપવા બ્રહ્માજીને વિનંતિ કરી.

તેની પણ વિનંતિ સાંભળી બ્રહ્માજીએ એની ઉંમરમાંથી વીસ વર્ષ ઓછાં કરી આપ્યાં.

હવે નંબરમાં આવ્યો મનુષ્યનો વારો ! બ્રહ્માજીએ માણસને પાસે બોલાવીને કહ્યું "ભાઈ ! તમે પણ મનુષ્ય લોકમાં જ જવાના છે ? કેમ કે એ લોકજ તમારો કહેવાયને ! ત્યાંજ તમે ખૂબ-ખૂબ ભણજો-ગણજો, સત્કર્મો કરજો અને ધનનું અર્જન કરજો. નીતિમાન બનો અને બીજાનું ભલું કરજો. તમારા ધર્મનું યથા યોગ્ય પાલન કરી પુણ્યોપાર્જન કરજો."

આવાં સુંદર કાર્યો ભગવાને મનુષ્ય માટે બાકી રાખેલાં છતાં વચ્ચેજ મનુષ્ય બકી પડ્યો, "અધધધ ! હું એક ને મારા માટે આટલાં બધા કામ ! ભગવાન ! પૃથ્વી પર હું કેટલા વર્ષ જીવતો રહીશ !

બ્રહ્માજી બોલ્યાં, ત્રીસ વરસ સુધી, માણસને ખૂબ અસંતોષ થઈ ગયો. માણસે બ્રહ્માજીને કહ્યું પ્રભુ ! આતો બહુજ ઓછી ઉંમર કહેવાય, આટલી ટૂંકી જિંદગીમાં હું શું કરી શકીશ ? પુરૂં લખવા વાચવાનું પણ હું નહીં કરી શકીશ પછી ધન ક્યારે કમાઈશ ? એનો ઉપભોગ ક્યારે કરીશ ? કૃપા કરીને મારી ઉંમર વધારી આપો તો ઉપકાર માનીશ."

બ્રહ્માજીએ કહ્યું જુઓ ભાઈ તમારી જિંદગીને વધારવા માટે મારી પાસે નવા કોઈ વરસો છે જ નહીં, હા ! તમારા પૂર્વે જે-જે પ્રાણીઓ મને મળી ગયાં છે, એમની જિંદગીના ઘટાડેલા વરસો મારા પાસે સિલકમાં જમા ખાતે છે, જો તમારી ઈચ્છા હોય તો તમને તે આપી દઉં."

બ્રહ્માજીએ મનુષ્યને પોતાની પાસે રહેલાં ગધેડાનાં વીશ વર્ષ, વાંદરાનાં દશ, કુતરાનાં વીશ વર્ષ એમ બધા મળીને રહેલા પચાશ વર્ષ વધારી આપ્યાં, આ કરવાથી મનુષ્યની જિંદગી ૮૦ વર્ષની થઈ ગઈ. આથી મનુષ્યનું જીવન વધી ગયું. તે ખૂબ ખુશ થતો ધરતી પર આવતો રહ્યો.

ધરતી પર આવતાની સાથે તેની જિંદગી શરૂ થઈ ગઈ, પ્રથમ તો ત્રીસ વર્ષ તેનાં પોતાનાંજ હતાં, તેથી તે ત્રીસ વર્ષ સુધી માણસ ખૂબ આનંદથી રહ્યો. ભણ્યો-ગણ્યો, ધન પણ સારૂ એવું કમાણો, ત્રીસ વર્ષ તો જોત-જોતામાં અને મોજશોખથી વ્યતીત થયાં, પછીનાં એકત્રીશથી માંડીને ૫૦ વરસની ઉંમર ગધેડાની હતી. તે વીસ વર્ષ દરમ્યાન માણસને ગદ્ધા મજુરીમાં પસાર થવા માંડ્યા. પરિવારનો ભાર વેંઢારવામાં, પત્નિની જરૂરિયાતોને સંતોષવામાં તેના વર્ષ વીતવાં લાગ્યા. પછીતો પુત્રોને તેણે પરણાવ્યા, પુત્રવધુઓ પણ ઘરમાં આવી અને તેના પૌત્રોનું આગમન થવા માંડ્યું. એમ કરતાં પચાસ વર્ષ પુરાં થયાં, હવે નંબર આવ્યો વાંદરાની જિંદગીના દશ વર્ષ. પુત્રવધુઓ કહેવા

માંડી દેખોને ! આ તમારા પોતરાં અને ઘરમાં કાંઈ કામજ કરવાં દેતા નથી એને થોડા બહાર લઈ જાઓ ને ! બિચારો મનુષ્ય ! હવે છોકરાંઓને આંગળીએ વળગાડી બહાર ફરવા લઈ જાય છે. એમનાં મનોરંજનો વાંદરાની માફક કરે છે. આમ કરતાં-કરતાં વાંદરાના વરસો વીતી જવાથી મનુષ્ય સાઈઠ વર્ષનો થઈ ગયો.

હવે કુતરાનાં વર્ષો થતાં-થતાં દિવસે-દિવસે તેની હાલત વધુ બગડવા માંડી. હાથપગ પણ કામ કરતા નથી. આંખોનું તેજ પણ ઓછું થવા માંડ્યું. દાતો પડી જવાથી મોઢું બોખું દેખાય છે. હવે તે કુતરા જેવી જિંદગી વીતાવે છે. કુતરાની જેમ ટગર-ટગર જુએ છે. બીજાં આવે છે ત્યારે જાણે તેમની સાથે વાત કરવાનો પણ અધિકાર નથી તેમ વર્તવા લાગે છે. પોતાની આત્મનિર્ભરતા સમાપ્ત થાય છે. જીવવું અને મરવું બધું એક સરખું ભાસે છે. આમ છેલ્લી જિંદગી કુતરાની જેમ હડધૂત બની પુરી કરે છે.

❀ શ્રીમદ જયંતસેનસૂરિ મ.સા.ના પ્રવચનાંશ

બોધ કથા

મનોવૃત્તિ

સંત રેવામલને ફળની લારી હતી ફળનો ધંધો સિઝન પ્રમાણે ચાલે, તેથી રેવામળ પણ સિઝન પ્રમાણે તે ફળોનું વેચાણ કરે, હજી ઘણી ઉંમર થઈ ન હતી. પણ ઘણીવાર એવું બનતું હોય છે કે જવાબદારીઓ અને ટેન્શનથી માણસ શરીરથી અને મનથી થાકી જતો હોય છે. એમ રેવામલના માથાના વાળ ભર યુવાનીમાં જવાબદારીઓએ ધોળા કરી નાખ્યા હતા. દૂબળો પાતળો દેહનો બાંધો અને ઉંડી ઉતરી ગયેલી આંખામાની ઈમાનદારીએ ગ્રાહકોને જીતી લીધા હતા.

એક વખત તેની પાસેથી ફળ ખરીદ્યાં કે પછી કાયમ તમે ચૂંબકની પેઠે તેની પાસેજ ખેંચાઈ જવાના, ન છેતરાવાનો ભય, ન ભાવમાં ગોલમાલ. બોલવાનું ઓછું પણ કદીયે ઓછું તોળવાની એની દાનતજ નહીં અને હસે તો એવું લાગે કે જાણે ફળોથી પણ અધિક મીઠું.

પરિવારમાં તેની વૃદ્ધ માતા, બે નાની બહેનો, બન્ને બહેનોને પરણાવવાની પણ જવાબદારી, નાનાભાઈને ભણાવવાનું, આટલું ઓછું હોય તે બે દિકરીઓ કૌશલ્યા અને શકુંતલાને સાથ દેવા ત્રીજી મુન્ની પણ આવી હતી.

કેરીની સિઝનનો એ પ્રથમ દિવસજ હતો. કૌશલ્યા અને શંકુતલાએ હર્ષભેર કરંડિયાઓ ખોલી કેરીઓ સાફ કરીને જહેમતપૂર્વક લારીમાં ગોઠવી દીધી. બહેને યાદ કરી લાડિલા ભાઈને છત્રી પણ આપી. માતાએ કહ્યું "બેટા ! આજે સારી આવક થાય તો છોકરીઓને નવો ફ્રોક લઈ આપજે."

બપોરનો સમય હતો, ધોમધખતી લૂ લાગી રહી હતી, ઉનાળાની બપોર પછી તો પૂછવું જ શું ? ગરમી અસહ્ય વર્ષી રહી હતી.

એક બહેન કાર લઈને આવ્યાં

અને આવતાંજ જેમતેમ બોલવા માંડ્યા, શું છેતરવાજ બેઠો છે ? તને ભગવાનનો ડર છે કે નહીં ? હમણાંજ મારો ડ્રાઈવર કેરી લેવા આવ્યો હતો તેને તે છેતર્યો, સાંભળ્યા છે ક્યાંય કેરીના ૧૪ રૂા. કિલોના ભાવ ? લે ઉતાર ગાડીમાંથી તારી કેરી અને પાંચ કિલોના રૂપીયા સીત્તેર પાછા લાવ."

આજુબાજુની લારીવાળા ભાઈઓ બેનને સમજાવા લાગ્યા. પણ જેને પૈસાનો ઘમંડ આસમાને પહોંચ્યો હોય તે કોઈની પણ વાત સાંભળે ? તે વાતમાં કઈ માલજ નથી.

આખરે, રેવાલાલે કેરીઓ પાછી લઈ બેનને સીત્તેર રૂા. પાછા ગણી આપ્યા.

લારીવાળાઓ ચર્ચાએ વળગ્યા. "હાફુસ કેરી ચૌદ રૂપીયાથી ઓછે ક્યાંય સાંભળી નથી. આ બેન ક્યાંની વાત કરતા હશે ?"

એટલામાં રેવામલની નજર પેલી બેનનું પર્સ જે પોતાની લારીમાં પડ્યું હતું તેના પર પડી. તે બેન પોતાનું પર્સ લારી ઉપર ભૂલી ગયા હતાં. રેવામલે સહુની હાજરીમાં હિંમત કરી બેનનું પર્સ ખોલ્યું, અંદર સો-સોની નોટોના ઢગલા હતા. તેમાંથી એક લારીવાળાએ એક વિઝીટીંગ કાર્ડ શોધી આપ્યુ જે કાર્ડમાં પેલાં બેનનું સરનામું લખેલું હતું.

રેવામલ પોતાની લારી બાજુમાં ઉભા રહેલા અનવર લારીવાળાને સોંપી સાઈકલ પર તે બેનના ઘેર જઈ પહોચ્યો, દરવાજાની બેલ મારતાંજ તે બહેન દરવાજો ખોલી બહાર આવ્યાં.

"બેન ! આ તમારૂ પર્સ તમે મારી લારી પર ભૂલી ગયેલાં,"

હા ઠીક, લાવ અને હા આ જો તો જા, કહી તે બહેને સામેના ડાઈનીંગ ટેબલ પર પડેલ હાફુસ આંબાનાં ઢગલા તરફ આંગળી ચીંધતા કહ્યું "જોયું ? હમણા મારી બહેન મુંબઈથી આવી, ને તે હાફુસ લેતી આવી, બાર રૂપીયાં લેખે. તમે તો બસ છેતરવાજ બેઠા છો."

આ આખુંય કથાનક આપણને ઘણું ઘણું કહી જાય છે.

શરત એક છે, સમજણ દ્રષ્ટિ આપણી જો સચેત અને સજાગ હોય તો ! પેલાં શ્રીમંત બેનમાં પૈસાનું અભિમાન સહેજ્ય છલકાઈજ આવે છે. અને વિશેષ તો નિર્ધન ઈન્સાનો તરફનો તેમનો તીવ્રતમ તિરસ્કારભાવ અછતો રહેતો નથી. દેશાવર અર્થાત બોમ્બે જેવી મોટી સીટીમાં વસ્તુ જે ભાવે મળે તેજ ભાવની અપેક્ષા એ પોતાના ગામમાં બેઠા મળે એમ સેવી રહ્યાં છે !

જ્યારે સંત રેવામલમાં પરિવારની પૂર્ણ જવાબદારીને પહોંચી વળવાની કુનેહ સ્પષ્ટ તરી આવે છે. જોકે ભાગ્યનો સથવારો ઓછો હોય તેવું જરૂર લાગે છે. પણ તેનો 'પુરૂષાર્થ તો પ્રબળ કક્ષાનો છે. એવી નિર્ધન અવસ્થામાં પણ જ્યારે પેલાં બેનનું પર્સ તેના હાથમાં આવે છે. અને તેમાં રહેલી સો-સોની નોટો તેને દેખાય છે. છતાં પારકું આંચકી લેવાની તેની મનોવૃત્તિ નથી. ધૂમતડકામાંય સાયકલ લઈ પેલાં બેનના ઘેર પર્સ પહોંચાડવા જાય છે. સંત રેવામલ ભલે પૈસાથી ગરીબ હશે પણ દિલમાં તો અમીરાઈજ છલકાતી નજરે આવે છે.

खाओ शाकाहारी आहार, बन्द करो जीवों पर प्रहार ।

पृथ्वी का सन्तुलन बनाओ, शाकाहारी [illegible]

आ. श्री कैलाससागरसूरि ज्ञान मन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

साहित्य मनिषी आचार्य देव श्रीमद्विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी द्वारा लिखित/सम्पादित उपलब्ध साहित्य आज ही मंगवाइये।

❀ नमो मन से नमो तन से (नवकार पर आधारित प्रवचनों का सुन्दर संकलन)	पांच रूपये
❀ जीवन ऐसा हो (मार्गानुसारी के पेंतीस गुणों का वर्णन)	पांच रूपये
❀ जयन्तसेन सतसई (विविध विषयों पर ७०७ दोहों का संकलन)	चार रूपये
❀ ज्योतिष प्रवेश (ज्योतिष सम्बन्धी प्रारंभिक जानकारी)	सात रूपये
❀ नवकार गुण गंगा (नवकार पर सुन्दर/भाववाही स्तवनों का संकलन)	पांच रूपये
❀ चिर प्रवासी (जीवन यात्रा के विभिन्न पड़ावों पर उपदेशात्मक मुक्तक)	चार रूपये
❀ गुरूदेव पुष्पांजलि (श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी के भक्ति गीतों का संग्रह)	तीन रूपये
❀ तीर्थ-वंदना (विविध तीर्थों के मूलनायक भगवंतों के स्तवन)	तीन रूपये
❀ भगवान महावीर ने क्या कहा ? (हिन्दी/गुजराती) (२५० सुक्तियों पर सुन्दर विवेचन)	बीस रूपये
❀ भक्ति सागर (स्तवनों का संकलन)	दो रूपये
❀ अरिहंते सरणं पवज्जामि (हिन्दी/गुजराती)	दस रूपये
❀ यतीन्द्र मुहुर्त दर्पण (मुहूर्त संबंधी वृहद् संकलन)	इक्कावन रूपये
❀ भक्ति प्रदीप (स्तवन)	दो रूपये
❀ हेम मुक्ति स्वयं सुधा (गुजराती)	पांच रूपये
❀ नवकार आराधना (हिन्दी) (नवकार पर मननीय प्रवचन)	पन्द्रह रूपये
❀ अष्टान्हिका व्यख्यानम् (पर्युषण व्याख्यान)	दस रूपये
❀ जिनेन्द्र पूजा संग्रह (वृहद्) (गुजराती) (विविध पूजायें चित्रों के साथ)	इक्कीस रूपये
❀ जिनेन्द्र पूजा संग्रह (लघु) (विविध पूजायें चित्रों के साथ)	दस रूपये
❀ पंच-प्रतिक्रमण विधी सह (पॉकेट साईज) (प्रतिदिन आवश्यक क्रिया में उपयोगी)	दस रूपये
❀ मनवा ! पल-पल बीती जाय	तीस रूपये
❀ मंगलमय नवकार (गुजराती)	पैतीस रूपये
❀ शीलत्व की सौरभ	पांच रूपये
❀ भक्ति रंग	तीन रूपये
❀ चिन्तन निधि	आठ रूपये
❀ निती शिक्षा द्वय पचीसी	पांच रूपये
❀ पारसमणी (हिन्दी/गुजराती)	दो रूपये
❀ गिरिराज गीतांजली (गुजराती)	देढ रूपये
❀ षड्द्रव्य विचार	बीस रूपये
❀ प्रवचन मौक्तिक (गुजराती)	रूपये
❀ जीवन-मंत्र	पांच रूपये
❀ वास्तुसार प्रकरण	सत्तर रूपये

उपरोक्त पुस्तकें मंगवाने हेतु मूल्य के साथ प्रति पुस्तक पोस्टेज दो रूपया जोड़कर मनी ऑर्डर निम्नांकित किसी भी पते पर भिजवायें।

१) **शाश्वत धर्म कार्यालय,** जामली नाका, थाने - ४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

२) **राजराजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट,** रतनपोल, अहमदाबाद (गुजरात)

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक व्यय चुकाये बिना भेजने की
अनुमति प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

मासूम पशुओं को

कत्लखाने

जाने से बचाइए

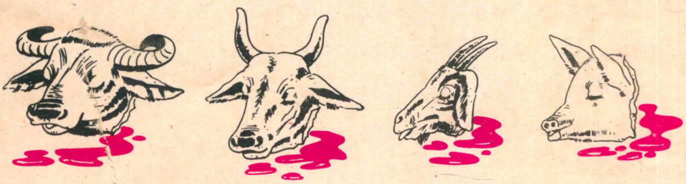

पशुओं का कत्ल हो, यह बड़ी घृणाजनक बात है. इसके प्रोत्साहन के लिए हम उत्तरदायी हैं. ऐसे पाप से बचने के लिए हमारा जागृत रहना आवश्यक है. पशुओं के कत्ल द्वारा प्राप्त अन्य पदार्थों से निर्मित कितनी ही चीजों को हम जाने-अनजाने, रोज़ाना इस्तेमाल करते हैं जैसे कि...

१) चर्बी/वसा (फ़ैट) : साबुन बनाने के लिए चर्बी का इस्तेमाल किया जाता है और वही साबुन हमारे उपयोग में आता है. वनस्पति घी बनता है जो वेफ़र्स, चिप्स, केक, बिस्किट वगैरह में इस्तेमाल होता है. और ये सभी चीजें हम समय-समय पर सेवन में लेते है.

२) चमड़ा : जिससे हम पर्स, पट्टे, सजावटी वस्तुएं, सर्दियों में इस्तेमाल की वस्तुएं - कोट, टोपी, दस्ताने आदि में इस्तेमाल करते हैं.

३) जिलेटिन : जो हड्डियों के भीतरी गूदे से तैयार होता है. आइसक्रीम, केक, चॉकलेट, जेली, चीज़ आदि में इस्तेमाल होता है, जिन्हें पौष्टिक आहार समझकर उपयोग में लाते हैं.

४) हड्डियों का पाउडर : डाइकेल्शियम फ़ॉस्फेट जो क्रिम, लोशन, टूथ पाउडर, टूथपेस्ट वगैरह बनाने में इस्तेमाल होता है, और इन वस्तुओं का सेवन हम प्रति दिन करते है. पशुओं को मारकर प्राप्त होने वाला मांस गैरशाकाहारी लोग सीधे-सीधे इस्तेमाल करते हैं. ऐसे ही कुछ लोगों की वजह से पशुओं का नाश होता है और अधिकतर पशुओं को कत्लखाने पहुंचाया जाता है. यह हमारे लिए दुख की बात है.

यदि ये सभी वस्तुएं हम इस्तेमाल करना बन्द कर दें तो हमारे बहुमूल्य पशुओं का नाश होना बन्द हो जाए. और कत्लखाने अपने आप बन्द हो जाएं. पशुओं बिना मनुष्य का जीवन असंभव है.

'अमर' - एक ऐसा उत्पादन है जिसमें किसी भी प्रकार की अभक्ष्य (प्राणीहीन) वस्तु या पदार्थ का मिश्रण नहीं होता. यह एक शुद्ध शाकाहारी है.. दांतों के स्वास्थ्य के लिए ८५% सफ़लता मिली है. जिसे आयुर्वेदिक की भावना से बनाया गया है. बेशक आजतक ऐसा श्रेष्ठ व उत्तम उत्पादन आप तक नहीं पहुंचा.

अमर
टूथपाउडर ■ टूथपेस्ट

ह र्ब ल भा व ना

सम्पादक : जे. के. संधवी, अ. भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये
डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स-थाने में मुद्रित।